वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

मार्च 01-15, 2026

हिन्दू विश्व

जब ग्राम मंदिर जीवंत होंगे
तब भारत की आत्मा भी पुनः प्रखर होगी

@eHinduVishwa

/HinduVishwa

हरिद्धार के प्रेस क्लब में प्रैस वार्ता को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

प्रयाग में विहिप-धर्मप्रसार विभाग के केन्द्रीय बैठक में उपस्थित धर्मप्रसार के अखिल भारतीय पदाधिकारीगण

लखनऊ (उ.प्र.) में बजरंग ढल की अखिल भारतीय बैठक को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे जी

गुरुग्राम में साँस्कृतिक गौरव संस्थान द्धारा आयोजित हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी, इन्द्रप्रस्थ के प्रांताध्यक्ष श्री कपिल खन्ना जी तथा संस्थान के पदाधिकारी

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

प्रजा की रक्षा करने वाले, जागृति एवं दक्षता प्रदान करने वाले, अग्निदेव याजकों को प्रगति का नवीन पथ प्रशस्त करने के लिए प्रकट हुए हैं। घृत की आहुतियों से अधिक प्रदीप्त होकर, विराट् आकाश का स्पर्श करने में समर्थ तेज से युक्त, पवित्रता प्रदान करने वाले आप साधकों के लिए (अनुदान देने हेतु) चमकते हैं। – सामवेद

01-15 मार्च, 2026
फाल्गुन शुक्ल-चैत्र कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पाराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishva@vhp.org

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

रंगोत्सव भरता है जीवन में विविध रंग	05
कला : सनातन का सौन्दर्य बोध	08
पाक सैन्य अधिकारी बोला, हिन्दुस्तान खत्म तो दुनियाँ से हिन्दू समाप्त	11
संघ प्रमुख द्वारा हिंदुत्व की व्याख्या	12
प्रकृति पूजा सरना व सनातन में समानताएँ	16
भारत में एक नए उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक का निर्माण हुआ है	18
होली : सामाजिक समरसता का पर्व है	20
हवन से मस्तिष्क (न्यूरो) की समस्याओं का समाधान	21
तेरापंथ महिला मंडल गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में	22
गरबा केवल मनोरंजन का कार्यक्रम नहीं.....आलोक कुमार	23
समुदाय को हिंदू हेरिटेज सेंटर,...	24
प्राचीन काल से हिंदू मठ-मंदिर भक्ति, शक्ति, सँस्कार.....	25
हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन	26

सुभाषित

सुवृत्तः शीलसम्पन्नः, प्रसन्नात्मात्मविद्बुधः।
प्राप्येह लोके सत्कारं, सुगतिं प्रतिपद्यते।।

जो सदाचारी, शीलसम्पन्न, प्रसन्नचित्त और आत्मतत्व को जानने वाला है, वह विद्वान पुरुष इस लोक में सत्कार पाकर परलोक में परम गति पाता है।

ग्राम मंदिर

आस्था से आत्मनिर्भरता तक—ग्रामोदय का जीवंत केंद्र

भारत के अनेक ग्राम मंदिर आज भी केवल पूजा–अर्चना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि सामाजिक समरसता, ग्राम विकास, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और सेवा कार्यों के प्रेरक केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं। देश के विभिन्न राज्यों से ऐसे अनेक उदाहरण सामने आते हैं, जहाँ मंदिरों ने ग्राम जीवन को संगठित, सँस्कारित और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये उदाहरण इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि ग्राम मंदिर ग्रामीण पुनर्निर्माण और साँस्कृतिक जागरण के प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

उत्तराखंड के श्रीनगर गढ़वाल क्षेत्र में स्थित धारी देवी मंदिर स्थानीय जनजीवन का महत्वपूर्ण केंद्र है। मंदिर समिति और ग्रामीण समुदाय मिलकर जलस्रोत संरक्षण, वृक्षारोपण और आपदा राहत कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। 2013 की भीषण आपदा के बाद यहाँ से राहत सामग्री वितरण, भोजन व्यवस्था और पुनर्वास सहयोग जैसे कार्य किए गए। मंदिर परिसर में सामूहिक बैठकों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, पलायन रोकने और ग्राम स्वावलंबन पर निर्णय लिए जाते हैं।

तमिलनाडु के मदुरै क्षेत्र में स्थित अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर के अन्नदान मॉडल से प्रेरणा लेकर आसपास के अनेक ग्राम मंदिरों में नियमित सामूहिक भोजन व्यवस्था विकसित हुई है। ग्रामीण किसान स्वेच्छा से अन्न दान करते हैं, जिससे गरीबों, यात्रियों और जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराया जाता है।

गुजरात के मोढेरा क्षेत्र में स्थित मोढेरा सूर्य मंदिर से प्रेरित होकर आसपास के ग्रामीण मंदिरों ने जल संरक्षण के अभियान चलाए हैं। प्राचीन कुंडों और तालाबों की सफाई, वर्षाजल संचयन और चेक–डैम निर्माण जैसे कार्य मंदिर समितियों के नेतृत्व में किए गए।

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के रालेगण सिद्धि गाँव में स्थित हनुमान मंदिर रालेगण सिद्धि सामाजिक सुधार का केंद्र रहा है। मंदिर परिसर में आयोजित ग्रामसभाओं के माध्यम से नशाबंदी, श्रमदान, जल संरक्षण और सामूहिक विकास योजनाओं पर निर्णय लिए गए।

राजस्थान के सीकर जिले में स्थित खाटू श्याम मंदिर से प्रेरित होकर आसपास के ग्राम मंदिरों ने गौशालाओं का संचालन प्रारंभ किया है। परित्यक्त और असहाय गौवंश की सेवा के साथ–साथ जैविक खाद का उत्पादन किया जाता है, जो स्थानीय किसानों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इससे कृषि लागत कम होती है और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।

उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के कालिंजर क्षेत्र में स्थित काली माता मंदिर कालिंजर के आसपास के ग्राम मंदिरों में संस्कार केंद्र और निःशुल्क शिक्षा कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

झारखंड के देवघर में स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम से प्रेरित सेवा परंपराओं ने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक सक्रियता को बढ़ाया है। श्रावणी मेले के दौरान स्वास्थ्य शिविर, स्वच्छता अभियान, जल सेवा और यात्री सहायता केंद्रों का संचालन स्थानीय मंदिर समितियों और युवाओं द्वारा किया जाता है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जहाँ ग्राम मंदिर सक्रिय हैं, वहाँ सामुदायिक एकता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, नैतिक अनुशासन और ग्राम स्वावलंबन को नई दिशा मिलती है। मंदिर लोगों को जोड़ने, प्रेरित करने और सेवा कार्यों के लिए संगठित करने का स्वाभाविक मंच प्रदान करते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देशभर के ग्राम मंदिर इन प्रेरक उदाहरणों से सीख लेकर अपने–अपने क्षेत्रों में सेवा और विकास के केंद्र बनें। मंदिर समितियाँ यदि स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, महिला स्वावलंबन समूह, युवा मार्गदर्शन और नशामुक्ति अभियानों से जुड़ें, तो ग्राम जीवन में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

आज आवश्यकता इस बात की है कि देशभर के ग्राम मंदिर इन प्रेरक उदाहरणों से सीख लेकर अपने–अपने क्षेत्रों में सेवा और विकास के केंद्र बनें। मंदिर समितियाँ यदि स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, महिला स्वावलंबन समूह, युवा मार्गदर्शन और नशामुक्ति अभियानों से जुड़ें, तो ग्राम जीवन में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

रंगोत्सव भरता है जीवन में विविध रंग

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन किया जाता है एवं चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को होली का उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव सामाजिक समरसता का उत्कृष्टतम् पर्व है। इस उत्सव को धुरेड़ी, धुलेड़ी, धुलंडी, धुलहेती, छारंगी, फाग, फगुआ, फाल्गुनी, वसंतोत्सव, वासंती, याओसांग, शिगमो, रंग पंचमी, डोल पूर्णिमा, डोल जात्रा, अडाडा, अदादा, होली, लट्ठमार होली, होला मोहल्ला, कुमाऊँनी होली इत्यादि नामों से जाना जाता है। इसी दिन बोहराजयंती भी होता है। इस उत्सव को रंग, गुलाल, रोली, अबीर, धुल (भारत माता के रजकण), कीचड़ (देश की मिट्टी), राख, दही, अनेक प्रकार के उबटन, मक्खन, हल्दी, चंदन, फूल, इत्र, फूलों के पराग इत्यादि का उपयोग कर के मनाते हैं। इस दिन गोष्ठी, परिहास, गायन–वादन, धुल–धमासा, जलक्रीड़ा और धमाल आदि का आयोजन भी करते हैं। गायन मंडलियाँ ग्राम भ्रमण करते हुए फगुआ के गीत गाते–बजाते, उपरोक्त रंगों का प्रयोग करते हुए हर द्वार तक जाती हैं, सभी के द्वार पर बैठकर एक–दो होली के गीत गाते हैं, अपने द्वार पर मंडली के आने के पूर्व लोग दरी–टाट–चादर बिछाकर रखते हैं, ठंढई–शरबत–सूखे मेवे–पकवान खिलाने –पिलाने के लिए तैयार रखते हैं। इस गायन का आरम्भ देवस्थान से होता है और यात्रा में हर देव स्थान पर अवश्य जाते हैं। बड़ों के पैरों पर अबीर–गुलाल –रंग रखकर उन्हें प्रणाम करते हैं, तो समकक्ष और छोटी आयु के लोगों को अबीर–गुलाल–रंग सिर पर, गाल और मुखमंडल पर लगाते हैं, रंगों से नहला भी देते हैं।

होली का उद्देश्य

आजकल इस उत्सव का रूप बहुत विकृत और उच्छृङ्खल हो गया है। लोग सभ्यता के साथ भगवद्भाव से भरे हुए गीत आदि गाकर यह उत्सव मनाते हैं। इस उत्सव के चार उद्देश्य प्रतीत होते हैं– (1) जनता जानती है कि होलीका के जलाने में प्रह्लाद के निरापद निकल जाने के हर्ष में यह उत्सव सम्पन्न होता है। (2) शास्त्रों में इस दिन इसी रूप में "नवान्नेष्टि" यज्ञ घोषित किया गया है, अतः नवप्राप्त नवान्न के सम्मानार्थ यह उत्सव किया जाता है। (3) यज्ञ की समाप्ति में भस्मवन्दन और अभिषेक किया जाता है, किंतु ये दोनों कृत्य विशेषकर कुत्सित रूप में होते हैं। (4) वैसे माघ शुक्ल पंचमी से चैत्र शुक्ल पंचमी पर्यन्त का वसन्तोत्सव स्वतः होता ही है।

होलिका दहन अर्थात् संवत जलाना

फाल्गुन मास के अंतिम दिवस को हम होलिका दहन करते हैं, जिसे देश के अनेक क्षेत्रों में सम्वत् जलाने का उपक्रम कहा जाता है। सम्वत् जलाने का अर्थ है, विगत वर्ष के व्यतीत हो जाने की शास्त्रीय घोषणा करना, विगत वर्ष में उत्पन्न जीवाणु, विषाणु, व्याधि, बुराई, कटुता, त्रुटियों, कुरीतियों को वर्ष के प्रतिमान रूप होलिकाग्नि में भष्मीभूत करना। होलिकाग्नि में अनेक औषधीय पदार्थों को जलाकर पूरे देश के वातावरण को उत्तम धूम्र से डीसईन्फेक्ट करते हैं, जिससे हवा और जलवायु दोनों शुद्ध और कल्याणकारक हो जाएँ।

होली का उत्सव

होलिका के ठीक दूसरे दिन चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को होली उत्सव का आयोजन होता है। यह वसंत के आगमन का आनंदोत्सव है। इसी दिन वनस्पतियों से बने नैसर्गिक रंगों का एक दूसरे को खूब उबटन लगाते हैं, एक दूसरे के शरीर को सभी प्रकार के जीवाणु–विषाणु संक्रमण से मुक्त करते हैं। आगामी वर्ष में सबके उत्तम स्वास्थ्य की गारंटी करते हैं। उबटन गीले रंगों का होता है, सूखे रंगों को अबीर, गुलाल, रोली, चंदन, कुमकुम इत्यादि के नाम से जानते हैं। यह एक प्रकार से नववर्ष के अग्रिम अभिनंदन का आनंदोत्सव भी है। इस उत्सव की अवधि विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न है। इस अवसर पर लोग बाँस या धातु की पिचकारी से रंगीन जल छोड़ते हैं या अबीर–गुलाल लगाते हैं। कहीं–कहीं लोग हथेली से मुख–स्वर उत्पन्न करते हैं। विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न प्रकार की विधियों का प्रचलन है।

होली की प्राचीनता

यह बहुत प्राचीन उत्सव है। इसका आरम्भिक शब्दरूप होलाका था (जैमिनि, 1/3/15–16)। भारत के पूर्वी भागों में यह शब्द प्रचलित था। जैमिनि एवं शबर का कथन है कि होलाका सभी आर्यों द्वारा सम्पादित होना चाहिए। काठकगृह्य (73/1) में एक सूत्र है "राका होलाके", जिसकी व्याख्या टीकाकार देवपाल ने की है–"होला एक कर्म–विशेष है, जो स्त्रियों के सौभाग्य के लिए सम्पादित

होता है, उस कृत्य में राका (पूर्णचन्द्र) देवता है।" अन्य टीकाकारों ने इसकी व्याख्या अन्य रूपों में की है। होलाका उन बीस क्रीड़ाओं में एक है, जो सम्पूर्ण भारत में प्रचलित हैं। इसका उल्लेख वात्स्यायन के कामसूत्र (1/4/42) में भी हुआ है, जिसका अर्थ टीकाकार जयमंगल ने किया है। फाल्गुन की पूर्णिमा पर लोग श्रृंग से एक–दूसरे पर रंगीन जल छोड़ते हैं और सुगंधित चूर्ण बिखेरते हैं। हेमाद्रि (काल, पृ. 106) ने बृहद्यम का एक श्लोक उद्धृत किया है, जिसमें होलिका–पूर्णिमा को हुताशनी (आलकज की भाँति) कहा गया है। लिगपुराण में वर्णन है– "फाल्गुन पूर्णिमा को "फाल्गुनिका" कहा जाता है, यह बाल–कीड़ाओं से पूर्ण है और लोगों को विभूति (ऐश्वर्य) देने वाली है।" वराहपुराण में आया है कि यह "पटवास –विलासिनी" (चूर्ण से युक्त क्रीड़ाओं वाली) है। हेमाद्रि (व्रत, मार्ग 2, पृ. 184–190) ने भविष्योत्तर. (132/1/51) से उद्धरण दिया है– युद्धिष्ठिर–कृष्ण संवाद में होली का वर्णन है।

कामदेव की पूजा

चैत्र की प्रतिपदा को होलिकाभष्म को प्रणाम करना चाहिए, मन्त्रोच्चारण करना चाहिए, घर के आंगन में वर्गाकार स्थल के मध्य में काम–पूजा करनी चाहिए। काम प्रतिमा पर सुन्दर नारी द्वारा चन्दन लेप लगाना चाहिए और पूजा करने वाले को चन्दन लेप से मिश्रित आम्र–बौर खाना चाहिए। इसके उपरान्त यथाशक्ति ब्राह्मणों, भाटों आदि को दान देना चाहिए और "काम देवता मुझ पर प्रसत्र हों, ऐसा कहना चाहिए। इसके आगे पुराण में वर्णन है कि जब फाल्गुन शुक्ल पक्ष की 15वीं तिथि पर पतझड़ समाप्त हो जाता है और वसन्त ऋतु का प्रातः आगमन होता है, तो जो व्यक्ति चन्दन लेप के साथ आम्र–मंजरी खाता है, वह आनन्द से रहता है।"

बँगाल की दौल यात्रा

बँगाल में कृष्ण–पूजा करते हैं, बँगाल में फाल्गुन पूर्णिमा पर कृष्ण–प्रतिमा का झूला प्रचलित है, किन्तु यह भारत के अधिकांश स्थानों में नहीं दिखाई पड़ता। बंगाल और असम में दौलयात्रा का उत्सव होता है– शूलपाणिकृत "दौलयात्राविवेक।" यह उत्सव पाँच या

तीन दिनों तक चलता है। पूर्णिमा के पूर्व चतुर्दशी को संध्या के समय मण्डप के पूर्व में अग्नि के सम्मान में एक उत्सव होता है। गोविन्द की प्रतिमा का निर्माण होता है। एक बेदिका पर 19 सम्मी से युक्त मण्डप में प्रतिमा रखी जाती है। इसे पंचामृत से नहलाया जाता है, कई प्रकार के कृत्य किये जाते हैं, मूर्ति या प्रतिमा को इधर–उधर सात बार डोलाया जाता है। प्रथम दिन की प्रज्वलित अग्नि उत्सव के अन्त तक रखी जाती है। अन्त में प्रतिमा 21 बार डोलाई या झुलाई जाती है। ऐसा वर्णन है कि इन्द्रद्युम्न राजा ने बृन्दावन में इस झूले का उत्सव आरम्भ किया था। इस उत्सव को करने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है। शूलपाणि ने इसकी तिथि, प्रहर, नक्षत्र आदि के विषय में विवेचन कर निष्कर्ष निकाला है कि दौलयात्रा पूर्णिमा तिथि की उपस्थिति में ही होनी चाहिए, चाहे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो, या, न हो। होलिकोत्सव के विषय में नि. स. (50/227), स्मृतिकौस्तुभम (50/516–519), पु. वि. (10/308–319) आदि में भी वर्णन आया है।

रंगपंचमी

फाल्गुन कृष्ण पंचमी को रंगपंचमी कहा जाता है। इसी दिन शिव को रंग अर्पित किया जाता है और रंगोत्सव प्रारम्भ हो जाता है।

रंगनाथ

श्रीरंगम् में भगवान् रंगनाथ का मन्दिर है। तेरहवीं, चौदहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने जब श्री–रंगम् पर अधिकार कर लिया, मन्दिर अपवित्र कर डाला। इस काल में श्रीरंगनाथ की मूर्ति मुस्लिम शासन से निकलकर दक्षिण भारत के कई स्थानों में घूमती रही। पुनः यहाँ हिन्दू राज्य स्थापित होने पर, श्रीरंगम् में इसकी पुनः स्थापना हुई।

भक्ति और देशभक्ति का रंग

हमारे देश में साक्षात रंगनाथ भगवान विराजमान हैं। बिस्मिल रचित माय मोरा रंग दे बसंती चोला, तो आप सभी ने सुना ही होगा। वसंती होली को ही कहा जाता है और वसंत ऋतु है, तो यह एक रंग भी है और जब ये बलखाती जवानी से मिल जाते हैं, तो संतों में भक्ति और देशप्राण युवाओं में देशभक्ति के रूप में प्रकट होता है। इस मातृभूमि की भक्ति का रंग जब किसी बंकिम पर चढ़ जाता है, तब उसकी लेखनी की धार से वन्देमातरम प्रकट होता है, यह देश को परकियों से मुक्त भी कराता है और भारत को सुजलाम्, सुफलाम्, सस्य स्यामलाम्, मलयज शितलाम् भी घोषित करता है।

वसन्तोत्सव

वसन्त ऋतु का उत्सव वसन्तोत्सव नाम से प्रचलित है। इसके बारे में वायुपुराण (6/10–21) में बड़ा रोचक तथा विशद वर्णन मिलता है। मालविकाग्निमित्रम् तथा रत्नावली नामक नाटकों की प्रस्तावना में बतलाया गया है कि वे दोनों

प्राकृतिक रंगों के मुख्य स्रोत

- **पीला** : हल्दी पाउडर को बेसन या आरारोट के साथ मिलाकर सूखा रंग बनाया जा सकता है। अमलतास और गुलदाउदी का भी उपयोग होता है। गीले रंग के लिए गेंदे के फूल या हल्दी को पानी में उबालते।
- **लाल** : सूखे लाल गुड़हल के फूलों को पीसकर या लाल चंदन पाउडर का उपयोग करें। चुकंदर के रस या टमाटर के रस से भी लाल रंग मिलता है।
- **हरा** : मेहंदी पाउडर, सूखी पालक, धनिया, पुदीना या नीम की पत्तियों को पीसकर हरा गुलाल बनाया जा सकता है।
- **नारंगी / केसरिया** : पलाश के फूलों (टेसू / ढाक) को रात भर पानी में भिंगोकर या उबालकर नारंगी रंग प्राप्त होता है। गेंदे के फूलों का भी उपयोग किया जा सकता है।
- **गुलाबी** : चुकंदर को कद्दूकस करके या उबालकर प्राकृतिक गुलाबी रंग तैयार होता है।
- **नीला** : नील के पौधों का उपयोग किया जा सकता है। ये रंग त्वचा के लिए हितकर और अनुकूल होते हैं, हानि न होकर, लाभकारी होते हैं।

नाटक वसन्तोत्सव के उपलक्ष्य में अभिनीत हुए थे। मालविकाग्निमित्रम् के तीसरे अंक में बताया है कि लाल अशोक के फूलों की भेंट लोगों ने अपने प्रिय जनों के पास भेजी थी तथा उच्च घराने की महिलाएँ अपने पतियों के साथ झूले में बैठा करती थीं। निर्णयसिन्धु इसे चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (पूर्णिमान्त की गणना करते हुए) को बतलाता है, जबकि पुरुषार्थ चिन्तामणि इसे माघ शुक्ल पंचमी (निर्णयामृत का अनुसरण करते हुए) को बताता है। पारिजातमंजरी नाटिका, प्रथम अंक के अनुसार चैत्र की परिबा को वसंतोत्सव मनाया जाता है।

होली के प्राकृतिक रंग

आज का पारा मिश्रित रासायनिक रंग अत्यधिक हानिकारक है, होली में उपयोग होने वाले रंग फूलों, पत्तियों, सब्जियों, मसालों, जड़ी–बूटियों से बनाये जाते हैं।

होलिका की हव्य विधि

बंगाल को छोड़कर होलिका–दहन सर्वत्र देखा जाता है कि लोग होलिका–दहन के समय परिक्रमा करते हैं, अग्नि में नारियल फेंकते हैं, गेहूँ, जौ, चना आदि के फलियों से युक्त डंठल फेंकते हैं और इनके अधजले अंश का प्रसाद बनाते हैं। कुछ प्रदेशों में पुरोहित द्वारा होलिका दहन के पूर्व पूजा करवाई जाती है, कहीं गाँव के लोग स्वयं भी पूजा कर लेते हैं। होलिका की अग्नि में गाय के सूखे गोबर, गाय का घी, हवनसामग्री के साथ कपूर, कपूर कचरी, नीम पत्ते, लवंग, काली इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, सौम्या तुलसी बीज, नागकेशर, कंकोल, कमलगट्टा, बेल गिरी, नारियल गिरी, जौ, तिल, चीड़ पत्र, देवदार पत्र, सहजन के फूल, कर्पूर, अजवाइन, सौंफ, पीपली, मजीठ, रतनजोत, गोंद, गोखरू, गुग्गुल, गौघृत, नागरमोथा, सुगंधकोकिला, सोमलता, जायफल, जावित्री, जटामांसी, अगर, तगर, चिरायता, हल्दी, गिलोय आदि जड़ी–बूटियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया जाता है। ज्वार, बाजरा, तिल एवं विभिन्न प्रकार के औषधीय जड़ी–बूटियाँ आदि सामग्री डालने से इनके अंदर के रसायन भी सूक्ष्म रूप में निकलते हैं, जो पूरे गाँव– नगर को वायु के कण के रूप में पोषण व सुगन्ध प्रदान करते हैं।

राख का उबटन

होलिका दहन के बाद दूसरे दिन होलिका की राख को शरीर पर मला जाता है। गाय के गोबर और औषधियों की यह राख यानी भस्म एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरल होती है। यह राख मानव शरीर के समस्त चर्म रोगों को समाप्त करने की शक्ति रखती है और मानव शरीर के चमड़ी में होने वाले रंध्र (सूक्ष्म छेद) को खोल देती है।

होलिका दहन के धुएँ की दिशा

संवत अर्थात् होलिका जलाने पर उठता हुआ प्रथम धुम्र पुंज जिस दिशा में जाता है, उसके अनुरूप मौनसून की स्थिति, अन्न उत्पादन का परिमाण, गाँव की खुशहाली, सुख–सौख्य, मेल–मिलाप इत्यादि का पता चल जाता है। यदि धुम्र वायव्य कोण में जाता है, तो बरसात अच्छी होती है। उत्तर दिशा में जाए तो अतिवृष्टि, इशान कोण से प्रभावी वृद्धि, पूरब दिशा से सौम्य की प्राप्ति, अग्नि कोण से आग का प्रकोप, गर्मी अधिक होने का संकेत, दक्षिण दिशा से दुर्भिक्ष, नैऋत्य कोण से व्याधि–महामारी का संकट एवं पश्चिम से संघर्षपूर्ण स्थिति का संकेत मिल जाता है। इसीलिए गाँव के लोग प्रथम धूम्र की दिशा का अवलोकन अवश्य करते हैं।

कला : सनातन का सौन्दर्य बोध

कान्ती लाल सुथर

कला क्या है? भाव का प्रगटीकरण ही कला है। किसी एक माध्यम से भाव को किसी दूसरे तक ले जाना कला है। इस संसार को हम कैसे देखते हैं वह दर्शन है, लेकिन भाव से ही दर्शन विकसीत होता है। आपके भाव से ही आपका दर्शन निर्धारित होता है। यदि हमारा दर्शन कहता है कि कण–कण में भगवान् व्याप्त हैं, तो यह संसार हमें ब्रह्म स्वरूप ही दिखाती है। जब हम ब्रह्म को साकार रूप मान लेते हैं, तो वह में हर जगह हमारे साथ–साथ ही चल रहा अनुभव होता है। जैसे वेदान्त के लिए तो जीव बह्म स्वरूप है, ब्रह्म का ही अंश है। हमारे अन्दर भी ब्रह्म हमारे बाहर भी ब्रह्म ... सब जगह ब्रह्म ही ब्रह्म।

कला के रूप में जो ईश्वर दिव्य है, वो पृथ्वी पर उत्तर आया है। जहाँ वो भूमि पर नहीं उतरेगा, वहाँ कलाकार पैदा हो ही नहीं सकते। कला का आकर्षण मन में एक अलग ही प्रेरणा उत्पन्न करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में कला का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कला अभिव्यक्ति को जीवन्त बना देती है। सनातन धर्म में मूर्ति को ईश्वर का साक्षात् मूर्त रूप माना जाता है, मंदिर भी चेतना के सजीव केन्द्र माने जाते हैं। इस्लाम में थोड़े बहुत जितने भी स्थापत्य बनाये भी हैं, तो वो किसी की कब्र ही है। किसी की मृत्यु कोई उत्सव तो हो नहीं सकता, इसलिए जब रस ही नहीं है तो सौन्दर्य कहाँ से होगा।

वेद धर्म का मूल है। मनुष्य के जीवन के लिए वेदों में सब कुछ है। कलाएँ भी वैदिक कर्मकांड से ही प्रकट हुई हैं। जग्राह पाठ्यम ऋग्वेदात यानी शब्द जहाँ है वह ऋग्वेद से लिए, संगीत सामवेद से लिया, अभिनय यजुर्वेद से लिया और रस अथर्ववेद से लिया, तब जाकर कला पूर्ण होती है। सबसे पहले मन में भाव प्रकट होता है, फिर भाव से दृष्टि उत्पन्न होती है, यह दृष्टि ही शारीरिक लय पैदा करती है, जिससे मनुष्य थिरकने लगता है। मन में प्रकट भाव से लेकर मनुष्य के थिरकने तक को हम नृत्य कहते हैं। इसीलिए भरत मुनि पंचम वेद माने जाने वाले 'नाट्यशास्त्र' में कहते हैं –

यतो हस्तः ततो दृष्टि ततो मनः।
यतो मनः ततो भावः, यतो भावः ततो रसः।।

(नाट्यशास्त्र 6.31)

वैसे तो इसका भावार्थ है कि ''जब हम शरीर (हाथ) से कोई काम करते हैं, तो दृष्टि उसे देखती है, जिससे मन एकाग्र होता है। जब मन पूरी तरह काम में लगता है, तो भावनाओं का प्रकटीकरण (भाव) होता है और अंततः जो परिणाम (रस) मिलता है, वह आनन्दमयी और परिपूर्ण होता है।'' लेकिन यह तो केवल भौतिक पक्ष ही है जो बाहर प्रकट है, जो अन्दर छिपा है वो तो बहुत ही गहरा है। जब आत्मा की एकाग्रता परमात्मा में हो जाती है, तब ईश्वर भक्ति उत्पन्न होती है, ईश्वर के प्रति यही समर्पण भाव परम आनन्द प्रदान करता है। जो भगवान से युक्त है वही भक्त है, जो भक्त नहीं वो विभक्त है और जो विभक्त हो गया वो भटक जाता है, अपने पंथ से भी, अपने जीवन से भी। भक्त के नृत्य में ईश्वर भी लयबद्ध है।

यह बात केवल नृत्य या संगीत तक ही सीमित नहीं है, जब कोई भक्त अपने मन में ईश्वर को स्थापित कर किसी पत्थर पर छेनी–हथौड़ा चलाता है, तो उस पत्थर से मुस्कुराते हुए ईश्वर प्रकट हो जाते हैं। यह प्रकटीकरण ही है क्योंकि उस पत्थर में तो पहले से ही ईश्वर थे, बस वो उसमें से अभी प्रकट हुए हैं। कला की यही विशेषता है, कला वही है जो प्रकट करे, क्योंकि कला स्वयं भी भाव से ही प्रकट हुई है। प्रकट होता है जो पहले से ही मौजूद है। भाव से कला प्रकट होती है और कला रचना प्रकट करती है। यह संसार भी एक रचना ही है, जिसका कलाकार ईश्वर है। हम सब उसकी ही रचना हैं और फिर भी हम भ्रम में रहते हैं कि हमने ईश्वर को प्रकट कर लिया। वास्तव में उन्होंने हमें प्रकट किया है। हाँ, प्रकट किया है..... अपने ही अंश से .... उस अंश से जो प्रकृति में पहले से ही था। तो इसी कारण ब्रह्म सब जगह व्याप्त है, हमारे अन्दर भी, हमारे बाहर भी।

जो कला को आकार देता है, वही कलाकार होता है। भावों को साकार रूप देने में वो सिद्धहस्त होता है। ईश्वर सबसे बड़ा कलाकार है उसकी कला में सृजन है, सौन्दर्य है, लय है, नियम है। ईश्वर की कलाकारी वास्तव में अनंत और विस्मयकारी है। जहाँ मनुष्य की कला अनुकरण है, वहीं ईश्वर की कला सृजन है। ईश्वर की हर रचना कला है, बहते हुए झरने से, चलती हुई हवा से यहाँ तक की परमाणुओं में अन्दर भी सुरीले स्वर हैं। ईश्वर ने अपनी रचनाओं में भी पक्के रंग भरे हैं..... फूलों से लेकर उसका रस पान करने वाली तितलियों तक वही रंग बिखेर दिए। ईश्वर ने समुद्र की अनन्त गहराई के मछलियों से लेकर प्रवाल तक वही रंग भर दिए। शंख जैसे जीवों में यहाँ तक की अन्तरिक्ष के तारों में, परमाणु की सूक्ष्मता में, बर्फ के रवों तक में ईश्वर ने कलाकारी बिखेरी है, मनुष्य ने इसे समझ कर इसे 'विरहाङक सँख्या' का रूप दिया, इससे ही उपजे स्वर्ण सूत्र से ही मनुष्य ने मंदिरों को आकार दिया।

कलाएँ हृदय से उपजती हैं लेकिन विज्ञान तो मस्तिष्क से ही उपजता है न, क्या यह सच है? जब जीवन का निर्माण करने वाले कण की रचना में स्वर्ण सूत्र साकार होते देखते हैं, तब तो ऐसा लगता है, जैसे विज्ञान भी कला से ही उपजी है। ईश्वर ने अपनी कलाकारी से किसी को नहीं छोड़ा, सूरजमुखी के फूलों से लेकर मोर पंख, वृक्षों की पतियों की शिराओं तक में, मधुमक्खी की हजारों आँखों तक में यही सौन्दर्य को अपने छत्ते के निर्माण में भर दिया। आकाशगंगाओं के चक्रीयता की विशालताओं से लेकर बर्फ रवों की सूक्ष्मता तक में यह 'ईश्वरीय हस्ताक्षर' विराट से लेकर सूक्ष्म रूप में दिखाई दे जाता है। तेजी से विनाश करने वाले चक्रवात से लेकर धीमे चलने वाले शंख में समय के इसी अनन्त गति चक्र को उतार दिया। ईश्वर ने सूरजमुखी के बीज, फर्न के शंकु, गोभी के फूल से लेकर DNA Helix तक में पता नहीं कहाँ–कहाँ इसको दोहराया। केवल रचना ही नहीं दोहराया, समुद्री लहरों से स्वर लेकर उसे शंख में भरकर हमारे कान की रचना में भी वही स्वर भर दिया।

रचना से लेकर स्वर तक अब दोहराने की बारी मनुष्य की थी। सबसे पहले आचार्य पिंगल ने अपने हृदय में उपजे 'नाद' (आंतरिक गूंज) की रचना कर 'मात्रा मेरू' का नाम दिया। आगे चलकर आचार्य विरहाङक ने लघु (S) और गुरु (L) मात्राओं के संयोजन से छंद को सँख्याओं के अनुक्रम (1,2,3,5,8, 13,21....) में बदल दिया। यह आगे से आगे जुड़ती जाने वाली ये सँख्याएँ (0+1=1, 1+1=2, 1+2=3, 2+3=5, 3+5=8, 5+8=13, 8+13=21..) 'विरहाङक सँख्या' कहलाती है। छन्द दोहराने का यह क्रम गोपाल और हेमचन्द्र सूरी से होते हुए जब सूदूर पश्चिम में पहुँचा, तो 'मेरू प्रस्तार' पास्कल ट्रायंगल और 'विरहाङक सँख्या' फिबोनाची सँख्या में बदल गया। नाम देकर श्रेय तो ले लिया, लेकिन फिबोनाची उसमें पूर्णता नहीं ढूंढ पाया। भारत में इसे संगीत से लेकर वास्तु तक में दोहराया गया 'अनाहत नाद' की तरह मन्दिर मन्दिर। यही इसकी पूर्णता है, जब ईश्वर भक्ति में निकली स्वर लहरी नृत्य पर थिरकने लगती है, तो वह मन्दिर की दीवारों के बीच में बार–बार घूमती रहती है, वहाँ रखे शंख की तरह।

मन्दिर इनकी पूर्णता का केन्द्र है। यह केवल सभी कलाओं का ही समुच्च्य नहीं होता, यह तो आस्था, कला और विज्ञान का संगम है। मन्दिर के बाहर बनी हुई मुर्तियाँ जीवन की पूर्णता है, तो गर्भगृह ब्रह्माण्ड में है। सम्पूर्ण मन्दिर ब्रह्माण्ड का लघुरूप (Microcosm) है। मन्दिर के निर्माण में स्वर्ण अनुपात का उपयोग इसी को प्रतिबिम्बित कर रहा है। श्रीधराचार्य सूत्र से ही स्वर्ण सूत्र नहीं उपजा है, प्रकृति की हर रचना में इसे दोहराया है, मनुष्य ने इसी का अनुकरण कर अपने शिल्प सौन्दर्य का निर्माण किया। निर्माण करने के बाद भी नृत्य–संगीत के रूप में भक्त द्वारा ईश्वर नाम की तरह इसे बार–बार दोहरा रहा है। यही सनातन की विशेषता है कि वो इसे पूर्णता में देखता है, स्वर को पहले गणितीय क्रम में जमा उसे बारहखड़ी बना देता है फिर उसी स्वर को संगीत के सुर में बदल देता है और जब शरीर नृत्य करने लगता है, तो स्वर लय और व्यंजन ताल बन जाते हैं। ताल समय का चक्र है, तो लय उसको दोहराने की गति। मन्दिर के गर्भगृह से लेकर ब्रह्माण्ड के हिरण्यगर्भ तक सभी समय के इसी ताल चक्र को दोहरा रहे हैं, मन्दिर में भक्त उस पर थिरक रहा है और ब्रह्माण्ड में ग्रह नक्षत्र।

आचार्य पिंगल और विरहाङक के गणितीय सँख्याओं से उपजे स्वर छंद गोपाल और हेमचन्द सूरी तक आकर शिल्पशास्त्र में उत्तर गए। आज भी हम्पी के पत्थरों में कैद हुआ स्वर चोट लगते ही स्वर उगलने लगता है। स्वर तो अदृश्य होता है, दिखाई नहीं सुनाई देता है, इसीलिए ज्ञान की अपूर्णता से भरे ब्रिटिश अधिकारी ने जब हम्पी के विट्ठल मन्दिर के पिलर को काटा तो केवल पत्थर ही निकला, स्वर नहीं। स्वर तो साधना है, जिसमें संतुलन आवश्यक है, लेकिन प्रशंसा तो व्यंजन ही पाते है। कहीं भोज में जाते हैं तो रोटी की नहीं व्यंजनों की प्रशंसा ही होती है। लेकिन स्वर ही मूल आधार है, भाषा से निकल वे

ही संगीत में सुर बन जाते हैं, उसके साथ बजने वाली धुन ही तो व्यंजन हैं, मीठी मिठाई की तरह मधुर।

कला केवल मनोरंजन नहीं अलग है। उससे मनोरंजन हो जाता है, यह बात है, वर्ना तो कला सृजन ही करती है। जब इन्द्र और अन्य देवताओं ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि वे उन्हें मनोरंजन का ऐसा साधन प्रदान करें, जिसे देखा भी जा सके और सुना भी जा सके (दृश्यं श्राव्यं च), ताकि सभी वर्णों के लोग इसका आनन्द ले सकें।

"क्रीडनीयकमिच्छामो दृश्यं श्राव्यं च यद्भवेत"

(नाट्यशास्त्र 1.11)

इसी प्रार्थना के फलस्वरूप ब्रह्मा जी ने चारों वेदों के तत्वों को मिलाकर 'पंचम वेद' यानी नाट्यवेद (नाटक) की रचना की। इस नाट्यशास्त्र में कश्मीर शैव दर्शन (प्रत्यभिज्ञा) की गहरी छाप है। इसके 36 अध्याय शिव दर्शन के 36 तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। संगीत को नाटय केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि मन की एकाग्रता बढ़ाकर मोक्ष की ओर ले जाता है। भरतमुनि कहते हैं नाट्य का उद्देश्य मानव जीवन के चार लक्ष्यों धर्म, अर्थ, कर्म और मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होना है। वेदों के गुढ़ ज्ञान को भरतमुनि ने 'सार्ववर्णिक' बना दिया। जन साधारण जो चाहे वह पढ़ा–लिखा हो या नहीं मनोरंजन के साथ–साथ नैतिकता और धर्म की शिक्षा ग्रहण कर सके।

रस के बिना कला का कोई अर्थ नहीं होता है, भरतमुनि कहते हैं ***'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।'*** (नाट्य शास्त्र 8.15) जिस प्रकार विभिन्न मसालों और सामग्रियों के मिलने से भोजन में 'स्वाद' आता है, वैसे ही भावों के मिलन से हृदय में 'रस' पैदा होता है।

''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पतिः'' (नाट्यशास्त्र 6.31) इसका अर्थ है कि विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पात्ति (अभिव्यक्ति) होती है। यही भाव का विभाजन है कि वो शरीर के अंग–अंग में प्रकट होता है। विभाव जो हृदय में सुप्त होते हैं वो स्थाई होते हैं, उद्दीपन पाते ही जागृत हो पाते हैं। स्वयं जागृत होकर सम्पूर्ण शरीर के अंग–अंग को जागृत कर देते हैं। बाहर प्रकट हुई यह चेष्टाएँ अनुभव बन जाती हैं, यही भरतमुनि का अनुभाव है। मंच पर थिरकते कलाकार दर्शकों के हृदय को भी उसी तरह लय सरिता में गोते लगवा देते हैं, जैसे वर्षा से नहाए पौधे। एक ही कलाकार के प्रदर्शन का अलग–अलग प्रभाव होता है। यह संचारी भाव दर्शक में चिंता, हर्ष, गर्व, लज्जा, मोह वासना जगा देता है, यही पल–पल बदलते क्षणिक भाव व्यभिचारी भाव कहलाते हैं।

बादलों के संगीत पर नाचती जल बुंदे सारे वातावरण को प्रफुल्लित कर देती हैं। इसी प्रकार यह रस का ही प्रभाव है, जीवन से लेकर वातावरण तक प्रकृति का हर पक्ष समुद्र की लहरों की तरह एकाकार हो जाता है। प्रकृति के इस मंच पर ईश्वर हम सभी को नचा रहे हैं। भाव का स्थान हृदय में है जो शरीर के केन्द्र में है, यहाँ से जागृत होते ही बिजली की तेजी से चारों तरफ संचारित होता है। इसके लिए गुरूत्व की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए मन का कोई नियंत्रण इस पर नहीं है। हृदय की गहराई में छिपी यह सात्विक अभिव्यक्ति चेहरे पर आहार्य के रूप में दिखाई देती है। कई बार मन भावों पर नियंत्रण करने का जबरन प्रयास करता है, मन पूरी शक्ति लगाता है रोकने के लिए लेकिन जब इसका गुब्बार फूटता है तो हंसी से लेकर आंसुओं की बाढ़ आ जाती। चेहरा भाव का दर्पण है, भाव भंगिमा इसका अर्पण है। चेहरा ही नहीं इसके पीछे से आने वाली वाणी भी वाचिक रूप से इसे अभिव्यक्ति कर देती है। एक शब्द के बोलने से ही उसके भावों का पता चल जाता है, लेकिन अंगिक रूप से शरीर मुद्राएँ तो बिना कुछ बोले ही अभिव्यक्ति कर देती हैं।

जहाँ अभाव है, वहाँ भाव नहीं होते, भावों का न होना ही अभाव है। जहाँ जीवन कठोर होता है, वहाँ भावनाएँ नहीं पनप सकती। अरब के अभावों से उपजी भूख ने भावों को दवा दिया। कलाएँ भी वहीं विकसित होती हैं, जहाँ उसे प्रश्रय मिले। समाज के पास इतना अधिक होना चाहिए, जो कलाकारों को पाल सके। कला की ज्योति जलाए रखने में समय का ईंधन व्यय होता है। सृजन समय लेता है संहार केवल क्षण। जो समाज लुट पर आश्रित हो वहाँ कलाएँ विकसित हो भी गई, तो ये कितनी चलेगी। जिसमें भाव नहीं थे, उन्होंने हमारे मन्दिर तोड़े। उनका अपना ब्रह्म इसमें नजर नहीं आया, क्योंकि उनका यह भ्रम इतना गहरा है कि 'ईश्वर हमारे अन्दर नहीं है।'' बिना भाव के निर्दयी हुआ मनुष्य मूर्तियों को भी ऐसे ही तोड़ता है, जैसे किसी बेजुबान जानवर की गर्दन काटता है। उसने मान लिया है कि उसका ईश्वर उसके साथ नहीं बल्कि उससे बहुत दूर सातवें आसमान पर बैठा है। वो अपना ईश्वर किसी में शामिल नहीं करता, क्योंकि ''शिर्क'' सबसे बड़ा गुनाह है, ऐसा वो मानता है।

व्यष्टि और सृष्टि को सतत मानने वाले सनातन में देवता कभी मरते नहीं, मंदिर उनकी चेतना के सजीव केन्द्र है। मनुष्य मरता है तो फिर से जन्म लेता है, समय का चक्र सतत चलता रहता है। सृजन जरूरी है क्योंकि आना तो फिर से इसी जगत में है। इस्लाम में थोड़े बहुत जितने भी स्थापत्य बनाये भी हैं, तो वो किसी की कब्र की है। किसी की मृत्यु कोई उत्सव हो तो नहीं सकता, इसलिए जब रस ही नहीं है, तो सौन्दर्य कहाँ से होगा।

पाक सैन्य अधिकारी बोला,

हिन्दुस्तान खत्म तो दुनियाँ से हिन्दू समाप्त

अजय कुमार

पाकिस्तानी सेना का वह जहरीला बयान फिर सामने आया है, जहाँ उनका एक बड़ा अधिकारी परमाणु शक्ति का राग अलापते हुए भारत को मिटाने की धमकी दे रहा है। यह वही पुरानी सोच है, जो हिंदुओं को दुनियाँ से उखाड़ फेंकने का खुला इरादा जाहिर करती है, लेकिन अब समय आ गया है कि हम इसकी पोल खोलें और पाकिस्तान की इस कायराना हरकत का मुँहतोड़ जवाब दें। पाकिस्तानी अधिकारी की जुबान से निकला वह जहर भरा बयान सुनकर खून खौल उठता है। वह चिल्ला रहा है कि हमारे पास परमाणु ताकत है, हम भारत को नेस्तनाबूद कर देंगे। जब संवाददाता ने सवाल किया कि इससे तो पाकिस्तान खुद भी मिट जाएगा, तो उसका जवाब और भी खतरनाक था। बोला, पाकिस्तान मिट जाए तो क्या, 56 इस्लामी देश तो बचेंगे, जो इस्लाम को हमेशा जिंदा रखेंगे। लेकिन अगर भारत गया, तो दुनियाँ से हिंदू भी खत्म हो जाएंगे, क्योंकि हिंदुओं का तो बस यही एक देश है। यह बयान कोई नया नहीं बल्कि पाकिस्तानी फौज की जन्मजात दुश्मनी का नंगा रूप है। 2020 में भी उनके एक ब्रिगेडियर ने यही बात कही थी कि मुसलमानों के 50 से ज्यादा देश हैं, हिंदुओं का तो सिर्फ भारत। परमाणु जंग में हिंदू सफाए हो जाएंगे, लेकिन इस्लाम बचेगा। यह सोच भारत को हिंदू राष्ट्र मानकर उसे निशाना बनाने की साजिश है।

इस बयान का मतलब साफ है, पाकिस्तान की फौज हिंदू–विरोधी जिहाद की भाषा बोल रही है। वे जानते हैं कि भारत दुनियाँ का एकमात्र हिंदू बहुल देश है, जहाँ करोड़ों हिंदू अपनी सँस्कृति, मंदिरों और परंपराओं के साथ जी रहे हैं। अगर भारत को मिटा दिया गया तो वैश्विक हिंदू समाज का केंद्र खत्म हो जाएगा। लेकिन ये भूल जाते हैं कि हिंदू सिर्फ जमीन पर नहीं बल्कि दिलों में बसते हैं। नेपाल, बाली, मॉरीशस जैसे देशों में भी हिंदू मजबूत हैं और दुनियाँ भर में करोड़ों हिंदू फैले हुए हैं। फिर भी पाकिस्तानी फौज का लक्ष्य साफ है भारत को हिंदुओं का किला मानकर उसे तोड़ना। यह वही मानसिकता है, जो 1947 के बंटवारे के समय जिन्ना ने बोई थी, दो राष्ट्र सिद्धांत के नाम पर हिंदुओं को कमजोर करने की। आज भी वही जहर फैला रहे हैं।

पाकिस्तान की यह सोच नई नहीं बल्कि उनकी पूरी इतिहास पुरानी दुश्मनी की गवाही देती है। 1971 की जंग में हमने उन्हें दो टुकड़ों में बांट दिया, बाँग्लादेश बन गया। तब भी वे परमाणु का ढोंग करते रहे। अब 2025 में सेना प्रमुख आसिम मुनीर अमेरिका की जमीन से चिल्ला रहे हैं कि अगर पाकिस्तान डूबा तो आधी दुनियाँ को ले डूबेंगे। भारत के पूर्व अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल ढिल्लों ने साफ कहा कि पाकिस्तान परमाणु इस्तेमाल करेगा, तो खुद मिट जाएगा, भारत इतना बड़ा है कि झेल लेगा और जवाब में उसे नेस्तनाबूद कर देगा। पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ भी परमाणु जंग की धमकी देते हैं, लेकिन यह सब गीदड़ भभकी है। उनकी अर्थव्यवस्था डूब चुकी, आंतरिक विद्रोह बलूचिस्तान में फैला हुआ है और फौज सिर्फ आतंकवाद पर टिकी है। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर जैसे हमलों से साबित कर दिया कि हमारी ताकत अटल है।

इस बयान से पाकिस्तान का असली चेहरा बेनकाब हो गया है। वे 56 इस्लामी देशों का सहारा लेते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि उनमें से ज्यादातर अपनी मुश्किलों में डूबे हैं। सऊदी, ईरान आपस में लड़ रहे, तुर्की सपनों में जी रहा है। ओआईसी नाम का संगठन भारत विरोधी प्रस्ताव लाता है, लेकिन व्यावहारिक मदद कभी नहीं करता। पाकिस्तान अकेला है, सिर्फ परमाणु का भूत दिखाकर दुनियाँ को डराता है। लेकिन भारत ने विदेश मंत्रालय के जरिए कड़ा जवाब दिया कि हम ब्लैकमेल से नहीं झुकेंगे। हमारी परमाणु नीति साफ है पहले इस्तेमाल नहीं करेंगे, लेकिन जवाब में अस्वीकार्य क्षति देंगे। पाकिस्तानी फौज की कमान कट्टरपंथियों के हाथ में है, जो परमाणु को इस्लामी बम मानते हैं। पूर्व सीआईए अधिकारी ने खुलासा किया कि पाकिस्तान ने परमाणु भारत विरोध के लिए बनाया, लेकिन उसे मुस्लिम बम बनाकर दूसरे देशों को बेचने की साजिश रची।

अब भारत को जागना होगा। यह बयान सिर्फ शब्द नहीं, युद्ध की घोषणा है। हमारी फौज दुनियाँ की सबसे मजबूत है, मिसाइलें, विमान, पनडुब्बियाँ सब तैयार। लाखों जवान हिंदुस्तान की रक्षा को तत्पर। सरकार को चाहिए कि ऐसे बयानों पर कूटनीतिक, सैन्य और आर्थिक जवाब दे। पाकिस्तान को अलग–थलग करो, आतंकवाद के अड्डों पर लगातार प्रहार करो। हिंदू समाज एकजुट हो, दुनियाँ को बताओ कि भारत हिंदुओं का किला है, इसे कोई नहीं हिला सकता। पाकिस्तानी फौज की यह जहर उगलने वाली सोच उन्हें ही निगल जाएगी। हम 140 करोड़ हिंदुओं की ताकत से खड़े हैं, जो कभी नहीं झुकेंगे। यह समय है बदले का, जहाँ पाकिस्तान अपनी हरकतों का खामियाजा भुगते। भारत जिंदा रहेगा, हिंदू धर्म अमर रहेगा और पाकिस्तान की साजिशें धूल चाटेंगी।

ajaimayanews@gmail.com

संघ प्रमुख द्वारा हिंदुत्व की व्याख्या

डॉ पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

मुंबई में हाल ही में हुए RSS@100 समिट में डॉ. मोहन भागवत ने हिंदू धर्म, हिंदुत्व और भारत को एक राष्ट्र के रूप में लेकर एक स्पष्ट संदेश और वैचारिक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने 2047 तक देश के विकास और विश्वगुरु बनने का रास्ता भी बताया। इस कॉन्फ्रेंस की सबसे खास बात यह थी कि डॉ. भागवत ने उन मशहूर हस्तियों के सामने खुलकर और बिना किसी झिझक के बात की, जिनमें से ज्यादातर ने या तो गलत बातें फैलाई हैं, या हिंदुओं और हिंदुत्व को गलत तरीके से दिखाया है। कई हैरान मशहूर हस्तियों और उनके फॉलोअर्स के मन में जो भी सवाल थे, उनका संक्षिप्त जवाब मिलने से उनके शक दूर हो गए। जो लोग इसमें शामिल हो पाए और जो अलग–अलग वजहों से शामिल नहीं हो पाए, उन सभी को पूरी दुनियाँ के साथ–साथ भारत के लिए भी हिंदुत्व के फायदों और अच्छाई के बारे में एक साफ संदेश और मार्गदर्शन मिला। उन्होंने हर उस मुद्दे पर बात की जिसने हमारे समाज और देश में, खासकर बॉलीवुड में, गलत तरीके से चिंताएँ पैदा की हैं। उन्होंने हर सवाल का जवाब अच्छे इरादे से और ऐसे तरीके से दिया, जिसकी सभी ने तारीफ की, बिना किसी की बुराई किए, भेदभाव किए या किसी एक को निशाना बनाए। आइए उनके कुछ विचारों पर नजर डालते हैं।

उन्होंने डॉ. हेडगेवार का हवाला देते हुए कहा कि भारत स्वभाव से एक हिंदू राष्ट्र है। डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि अगर सिर्फ एक भी ऐसा हिंदू जीवित है, जो भारत को भारत माता मानता है, तो भी भारत को हिंदू राष्ट्र ही माना जाएगा। डॉ. भागवत ने हिंदुओं की चार कैटेगरी के बारे में और विस्तार से बताया। पहली कैटेगरी वह है जो गर्व से कहता है कि वह हिंदू है। दूसरी कैटेगरी वह व्यक्ति है, जो कहता है कि मैं हिंदू हूँ और पूछता है कि इस पर गर्व करना इतना जरूरी क्यों है ? तीसरी कैटेगरी वह है जो अपनी हिंदू पहचान को छिपाकर रखना चाहता है और सिर्फ चार दीवारों के अंदर ही खुद को ऐसा

बताएगा। चौथी कैटेगरी वह है जिसने अपनी हिंदू पहचान खो दी है।

हम ऊपर कही गई बातों का मतलब इस तरह समझ सकते हैं : अगर आप किसी आम भारतीय यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट को महाभारत के मूल्यों के बारे में बताते हैं, तो वह अपना शेक्सपियर का ज्ञान दिखाने के लिए उत्सुक हो जाएगा। जब आप उससे सनातन धर्म के दर्शन के बारे में बात करते हैं, तो आपको पता चलता है कि वह उस तरह का नास्तिक है, जैसा एक पीढ़ी पहले यूरोप में आम था। धर्म की कमी के अलावा, उसमें एक आम अँग्रेज की तरह दार्शनिक ज्ञान की भी कमी है। अगर आप उससे भारतीय संगीत की बात करते हैं, तो वह हारमोनियम या ग्रामोफोन निकालेगा और आप पर एक या दोनों थोप देगा। उससे भारतीय गहनों या कपड़ों के बारे में बात करें। वह उन्हें पुराना और असभ्य बताएगा। उससे भारतीय कला के बारे में बात करें, उसे पता ही नहीं कि ऐसी कोई चीज मौजूद है। उसे अपनी मातृभाषा नहीं आती, इसलिए उससे आपके लिए एक चिट्ठी का अनुवाद करने को कहें। असल में वह अपने ही देश में एक बाहरी व्यक्ति है। ऐसा क्यों हो रहा है ?

सोशल मीडिया और मेनस्ट्रीम मीडिया प्लेटफॉर्म पर कहानियाँ गढ़कर, साथ ही बॉलीवुड फिल्मों के जरिए, हिंदुओं को उनकी हिंदू पहचान और सँस्कृति को भुलाने या उससे नफरत करने के लिए कई तरह की जहरीली रणनीतियाँ अपनाई जा रही हैं। इन घटिया हरकतों में शामिल लोगों को यह समझना चाहिए कि हिंदुओं को बदनाम करने से देश कमजोर होता है और आखिरकार यह टूट जाएगा। केवल एक मजबूत, एकजुट हिंदू आबादी ही देश की प्रगति, एकता और दूसरे धर्मों और रीति–रिवाजों को स्वीकार करने की भावना को बनाए रख सकती है। अगर हिंदू बहुमत को नकार दिया जाता है, जैसा कि बाँग्लादेश और पाकिस्तान में है, तो हिंदुओं और इंसानियत के लिए कोई जगह नहीं है। इसलिए जो लोग कहानियाँ गढ़ते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि अगर धर्मांतरण, हत्या आदि के कारण हिंदू आबादी कम होती है, तो

उन्हें भी आने वाले समय में बहुत ज्यादा नुकसान होगा। हिंदुओं और इंसानियत के खिलाफ काम करने की हमारी गलतियों को आने वाली पीढ़ियाँ कभी माफ नहीं करेंगी।

हिंदुत्व क्या है ?

हिंदुत्व हमारी पहचान की गहरी समझ है, जो हजारों सालों से हमारे समृद्ध इतिहास का हिस्सा रही है। जो लोग हिंदुत्व को नकारते हैं, वे इसे समझते नहीं हैं। यह अपने ही रंग, बालों के रंग आदि का विरोध करने जैसा है, एक हिंदू का, या ज्यादा सटीक रूप से, सभी भारतीयों का विरोध करना, जिसका मतलब है हिंदुत्व का विरोध करना। आप कितनी भी कोशिश कर लें, आप खुद को उससे अलग नहीं कर सकते, जो आपका हिस्सा है। सामाजिक संदर्भ में, हिंदुत्व का मतलब वह सब कुछ है जो भारतीय है। हिंदुत्व भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक है। हिंदुत्व का विश्व दृष्टिकोण सभी लोगों को एक समान पूर्वजों और मातृभूमि के आधार पर एक मानता है। हिंदुत्व भारत की राष्ट्रीय और साँस्कृतिक पहचान की अवधारणा है। यह ध्रुवीकरण और संकीर्ण सोच के विपरीत है।

व्यापक अर्थ में हिंदुत्व यह मानता है कि किसी का भी धर्म, विचारधारा या पूजा का तरीका कुछ भी हो, सनातन धर्म जीवन जीने का एक सार्वभौमिक तरीका है, जिसे कोई भी अपना सकता है। एक उदार और प्रगतिशील समाज में, हिंदुत्व आध्यात्मिक विकास का एक व्यवस्थित और व्यापक अनुभव है, जिसमें अनुष्ठानों से लेकर मूर्ति पूजा, मंत्र और तत्वमीमांसा, कर्म और मोक्ष, ध्यान और योग और इसके सभी मनोरंजक पहलू जैसे नृत्य, संगीत और रंगमंच शामिल हैं। चूंकि हिंदुत्व सभी व्यक्तियों को समान मानता है, इसलिए यह जाति, भाषा, लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करता है।

हिंदुत्व उन सभी बुराइयों, अंधविश्वासों और अन्याय का विरोध करता है, जो समय के साथ बढ़े हैं और सामाजिक सुधार कार्यक्रमों का समर्थन करता है। हिंसा और प्रोपेगेंडा के परिणामस्वरूप भारत में उभरी अलगाववादी प्रवृत्तियों का समाधान हिंदुत्व है, जो सभी हिंदुओं को एकजुट कर सकता है। हिंदुत्व हिंसक औपनिवेशिक विचारधारा से पैदा हुई हीन भावना से लड़ता है और भारतीय मानस में आत्म–सम्मान की भावना पैदा करता है।

हिंदुत्व हमें वसुधैव कुटुंबकम सिखाता है। वसुधैव कुटुंबकम एक ऐसी विचारधारा है, जो इस विचार को बढ़ावा देती है कि सभी व्यक्ति एक ही परिवार के हैं। हिंदुत्व मानता है कि भारत सिर्फ एक भूगोल नहीं बल्कि एक जीवंत, प्राचीन सभ्यता है, इसीलिए इसे भारत माता कहा जाता है। सीधे शब्दों में, सावरकर ने कहा था, 'हिंदुत्व एक इतिहास है, कोई शब्द नहीं।'

हिंदुत्व राष्ट्रीय धर्म, संविधान और हिंदू धर्म को देश के आधिकारिक धर्म के रूप में स्थापित करता है, साथ ही हिंदू समुदाय को लोकतंत्र और आधुनिकता के साथ एकीकृत करके एक अधिक न्यायपूर्ण और कुशल भारत का निर्माण करता है। लोगों को सभी विषयों जैसे भौतिकी, गणित, नैतिकता और जीवन कौशल में उच्च–स्तरीय, धार्मिक आधार पर शिक्षा मिलेगी, जिससे वे बुद्धिमान, मददगार वयस्क बन सकेंगे, जो खतरों, आतंकवाद, अपराध और भ्रष्टाचार का विरोध कर सकें। वास्तव में हिंदुत्व सभी धर्मों के लोगों, यहाँ तक कि नास्तिकों के लिए भी एक सामाजिक आदर्श के रूप में मिलकर काम करने और बुनियादी ढांचे में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।

हिंदुत्व सामूहिक विकास और सामूहिक आत्म–संरक्षण की एक सहज और व्यापक विचारधारा है, जिसने लाखों आत्म–जागरूक भारतीयों के दिलों और दिमागों पर कब्जा कर लिया है, जो हिंदू सँस्कृति की अंतर्निहित भव्यता और उसके सुंदर और गौरवशाली अतीत से भी अवगत हैं। हिंदुत्व का लक्ष्य भारत को 'विश्वगुरु' बनाना है, जिससे न केवल राष्ट्र को बल्कि पर्यावरण और बाकी दुनियाँ को भी सभी राष्ट्रों के बीच सद्भावना को बढ़ावा देकर लाभ होगा। हिंदुत्व भारत के एक महाशक्ति बनने के खिलाफ है, जो अन्य देशों की सँस्कृतियों को नष्ट करता है और उन्हें गुलाम बनाता है।

हिंदुत्व एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के लिए प्रयास करता है, जो प्रत्येक व्यक्ति के विशिष्ट राष्ट्रीय चरित्र को बढ़ावा दे। इसका लक्ष्य पर्यावरण को खतरे में डाले बिना अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से राष्ट्र और दुनियाँ को आगे बढ़ाना है। वेदों, उपनिषदों, गीता, तिरुक्कुरल, रामायण, महाभारत और अन्य महत्वपूर्ण हिंदू ग्रंथों में पाए जाने वाले मूल्यों का सम्मान करने का एक शानदार तरीका हिंदुत्व है। अगर इसमें मंदिरों में जाना, उनकी सराहना करना और उन्हें ठीक करना शामिल है, तो यह बहुत बढ़िया है। अगर इसमें हमारे पास मौजूद सभी शानदार टूल्स, जैसे योग और मेडिटेशन का इस्तेमाल करके आध्यात्मिकता को एक्सप्लोर करना शामिल है, तो यह बहुत अच्छी बात है।

हिंदुत्व का सीधा मतलब है, 'हिंदूपन' और जिस धर्म को यह दिखाता है, उसी तरह यह भी बहुत समावेशी और व्यापक है। अगर हम बाकी दुनियाँ के साथ समानताएँ खोजें, तो हम पाएंगे कि सब कुछ एक ही फिलॉसफी के अन्तर्गत आता है। सिर्फ हिंदुत्व ही इतने ऊँचे लेवल के इंटीग्रेशन में सक्षम है। हिंदुत्व सिर्फ समुदाय के प्रति भक्ति या पूजा का एक रूप नहीं है। इस देश में हर समुदाय या धर्म का पालन करने वाला इस साँस्कृतिक विचार को शेयर करता है।

'हिंदू' शब्द एक संबंधित वंश या विरासत को बताता है, जो अपने मूल्यों, रीति–रिवाजों और मान्यताओं को शेयर करता है। हिंदुत्व खुद को भारत की पहचान के रूप में स्थापित करने की कोशिश में एक साँस्कृतिक और राष्ट्रवादी अवधारणा के रूप में दिखाता है। हालाँकि इसके लिए किसी धार्मिक वर्गीकरण की जरूरत नहीं है। हिंदुत्व, अपने सबसे व्यापक अर्थ में, यह मानता है कि उपयुक्त गैर–हिंदू समुदाय एक सामान्य हिंदू सँस्कृति या जीवन शैली को शेयर करते हैं और उसका पालन करते हैं। सामाजिक संदर्भों में, हिंदुत्व का मतलब वह सब कुछ है, जो भारतीय है।

हमें उम्मीद है कि डॉ. मोहन भागवत का हिंदुओं और हिंदुत्व पर किया गया गहरा विश्लेशण उन लोगों की मदद कर सकता है, जो भ्रमित हैं, नफरत करते हैं, या झूठी कहानियों के कारण गलत धारणाएँ बना चुके हैं।

जब ग्राम मंदिर जीवंत होंगे तब भारत की आत्मा भी पुनः प्रखर होगी

विजय शंकर तिवारी

भारत का ग्राम्य जीवन केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत साँस्कृतिक चेतना का केंद्र रहा है। इस चेतना के केंद्र में सदैव ग्राम मंदिर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। गाँव का मंदिर केवल पूजा–अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन, साँस्कृतिक संरक्षण, लोकशिक्षा, नैतिक मार्गदर्शन और सामुदायिक विकास का मूलाधार रहा है। भारतीय परंपरा में धर्म और जीवन अलग–अलग क्षेत्र नहीं, बल्कि एक समग्र जीवन–दृष्टि के अंग हैं। इसी कारण मंदिर ग्राम जीवन का धुरी–बिंदु बनकर उभरता है।

भारतीय सभ्यता की मूल संरचना ग्राम आधारित रही है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक गाँव आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में विकसित होते रहे। इस आत्मनिर्भरता के पीछे केवल आर्थिक संरचना नहीं, बल्कि साँस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आधार भी रहा, जिसका केंद्र ग्राम देवालय होता था। मंदिर ग्राम की आत्मा का प्रतीक है–जहाँ ईश्वर के प्रति श्रद्धा के साथ –साथ सामाजिक समरसता, न्याय और कर्तव्यबोध का सँस्कार विकसित होता है।

ग्राम मंदिर आराधना का केंद्र है–यह उसका प्रथम और स्पष्ट स्वरूप है। प्रातःकाल की आरती, संध्या वंदन, भजन–कीर्तन, पर्व–त्योहार–ये सभी धार्मिक क्रियाएँ केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि सामुदायिक एकता को सुदृढ़ करने के साधन भी हैं। जब पूरा गाँव एक साथ दीप प्रज्वलित करता है, तो वह केवल मंदिर का दीप नहीं होता, बल्कि सामूहिक चेतना का प्रकाश बन जाता है। धार्मिक अनुष्ठान व्यक्ति को आत्मसंयम, अनुशासन और कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाते हैं, जो सामाजिक जीवन में नैतिकता को सुदृढ़ करते हैं।

मंदिर सामाजिक समरसता का केंद्र भी है। भारतीय ग्राम व्यवस्था में जाति, वर्ग और आर्थिक स्थिति के भेद मौजूद रहे, परंतु मंदिर वह स्थान था, जहाँ सभी लोग एक साथ खड़े होकर ईश्वर के समक्ष समानता का अनुभव करते थे। प्रसाद वितरण, सामूहिक भंडारा, कीर्तन मंडली, ग्राम उत्सव–इन सबने सामाजिक दूरी को कम करने का कार्य किया। मंदिर ने यह संदेश दिया कि ईश्वर के समक्ष सभी समान हैं; यह विचार सामाजिक सुधार का मूल प्रेरक बना।

ग्राम मंदिर लोकशिक्षा का प्राचीन केंद्र रहा है। आधुनिक विद्यालयों के पूर्व गुरुकुल व्यवस्था और पाठशालाएँ प्रायः मंदिरों से जुड़ी होती थीं। यहाँ बच्चों को केवल अक्षरज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा, आचार–विचार, परंपराएँ, लोककथाएँ और जीवन मूल्यों का ज्ञान दिया जाता था। रामायण, महाभारत, पुराणों और संत साहित्य की कथाएँ सुनते हुए बालमन में धर्म, साहस, सेवा और त्याग के सँस्कार विकसित होते थे। इस प्रकार मंदिर शिक्षा को जीवनोपयोगी और सँस्कार प्रधान बनाता था।

ग्राम विकास के संदर्भ में मंदिर की भूमिका अत्यंत व्यापक रही है। मंदिर ग्राम की सामुदायिक गतिविधियों का केंद्र होता था–चाहे वह तालाब निर्माण हो, रास्तों की मरम्मत, गौशाला का संचालन, अन्नक्षेत्र की व्यवस्था, या अकाल एवं आपदा के समय सहायता का संगठन। मंदिर परिसर में ग्राम सभा का आयोजन होता, जहाँ सामूहिक निर्णय लिए जाते थे। इस प्रकार मंदिर स्थानीय स्वशासन की परंपरा को सशक्त बनाता था।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी मंदिर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मंदिरों के पास कृषि भूमि होती थी, जिसका उपयोग अन्न उत्पादन और सामुदायिक सेवा के लिए किया जाता था। मंदिर उत्सवों के दौरान स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों, संगीतज्ञों और व्यापारियों को रोजगार मिलता था। मेला और जत्राएँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देती थीं। इस प्रकार मंदिर केवल आध्यात्मिक संस्था नहीं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों का प्रेरक भी था।

भारतीय कला और सँस्कृति के संरक्षण में ग्राम मंदिर की भूमिका अद्वितीय है। लोकनृत्य, लोकगीत, भजन, नाट्य, कीर्तन–ये सभी परंपराएँ मंदिर से जुड़ी रहीं। मंदिर उत्सवों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी साँस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण होता रहा। ग्रामीण शिल्प–मिट्टी की मूर्तियाँ,

अलंकरण, रंगोली, तोरण–इन सबका विकास मंदिर सँस्कृति से हुआ। इस प्रकार मंदिर जीवित साँस्कृतिक संग्रहालय की तरह कार्य करता रहा।

नैतिक और सामाजिक अनुशासन बनाए रखने में भी मंदिर का योगदान रहा है। मंदिर से जुड़े संत, पुजारी और विद्वान समाज को मार्गदर्शन देते थे। विवादों का समाधान, पारिवारिक कलह का निवारण, और सामाजिक नियमों का निर्धारण–इन सबमें मंदिर की भूमिका होती थी। यह व्यवस्था न्यायालय से अधिक नैतिक प्रभाव पर आधारित थी, जिससे सामाजिक संतुलन बना रहता था।

पर्यावरण संरक्षण की भारतीय परंपरा भी मंदिरों से जुड़ी रही है। मंदिर परिसर में पीपल, बरगद, तुलसी, बेल जैसे पवित्र वृक्ष लगाए जाते थे। सरोवर और कुएँ मंदिर से जुड़े होते थे, जिनका संरक्षण धार्मिक कर्तव्य माना जाता था। यह व्यवस्था पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का प्रभावी माध्यम थी। आज जब पर्यावरण संकट विश्वव्यापी समस्या बन चुका है, तब मंदिर–आधारित पारिस्थितिक चेतना पुनः प्रासंगिक हो उठी है।

आधुनिक समय में ग्राम मंदिरों की भूमिका नए संदर्भों में और भी महत्वपूर्ण हो सकती है। यदि मंदिरों को केवल पूजा स्थलों तक सीमित न रखकर सामाजिक सेवा केंद्र के रूप में विकसित किया जाए, तो वे ग्रामीण विकास के शक्तिशाली माध्यम बन सकते हैं। मंदिर परिसर में पुस्तकालय, सँस्कार केंद्र, निःशुल्क शिक्षण, आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर, महिला स्वावलंबन प्रशिक्षण, गौसंवर्धन और पर्यावरण संरक्षण अभियान चलाए जा सकते हैं। इससे मंदिर पुनः ग्राम जीवन के केंद्र में सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

आज ग्रामीण समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है–प्रवास, साँस्कृतिक विघटन, नशाखोरी, पारिवारिक विघटन, और पर्यावरणीय संकट। इन समस्याओं के समाधान के लिए केवल सरकारी योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं; सामाजिक चेतना और नैतिक आधार की आवश्यकता है। ग्राम मंदिर इस चेतना को जागृत करने का सशक्त माध्यम बन सकता है। जब धार्मिक आस्था सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ती है, तब विकास स्थायी और मानवीय बनता है।

महिला सशक्तिकरण में भी मंदिर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भजन मंडलियों, स्वयं सहायता समूहों, सँस्कार वर्गों और कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएँ सामाजिक नेतृत्व में आगे आ सकती हैं। इसी प्रकार युवाओं के लिए योग शिविर, खेलकूद, साँस्कृतिक कार्यक्रम और व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण आयोजित कर उन्हें सकारात्मक दिशा दी जा सकती है।

ग्राम मंदिर राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक है। भारत की विविधता–भाषा, वेशभूषा, रीति–रिवाज – इन सबके बीच मंदिर भारतीयता की साँझा पहचान प्रस्तुत करता है। राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा, हनुमान जैसे आराध्य देव विभिन्न क्षेत्रों में पूजे जाते हैं, परंतु उनके माध्यम से साँस्कृतिक एकता का सूत्र स्थापित होता है। यह एकता भारत की शक्ति है।

इतिहास साक्षी है कि जब भी समाज ने मंदिरों को जीवंत रखा, तब संस्कृति और नैतिकता सुदृढ़ रही; और जब मंदिर केवल औपचारिकता तक सीमित हुए, तब सामाजिक विघटन बढ़ा। अतः आवश्यक है कि ग्राम मंदिरों को पुनः सामाजिक पुनर्निर्माण के केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। यह कार्य केवल पुजारियों या किसी एक संगठन का नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक दायित्व है।

ग्राम मंदिर हमें यह स्मरण कराता है कि विकास केवल भौतिक सुविधाओं का विस्तार नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक संतुलन का समन्वय है। यदि ग्राम विकास की योजनाओं में मंदिर को सहभागी बनाया जाए, तो विकास अधिक स्थायी, सांस्कृतिक रूप से अनुकूल और सामाजिक रूप से समावेशी होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि गाँव का मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि जीवन का विद्यालय, सँस्कृति का संरक्षक, समाज का संयोजक और विकास का प्रेरक है। भारतीय ग्राम्य जीवन की पुनर्स्थापना और सशक्तिकरण के लिए मंदिर की भूमिका को पुनः समझना और सुदृढ़ करना समय की आवश्यकता है। जब ग्राम मंदिर पुनः जीवंत होंगे, तब भारत की आत्मा भी पुनः प्रखर होकर विश्व को मार्गदर्शन देने में समर्थ होगी।

और नैतिकता सुदृढ़ रही; और जब मंदिर केवल औपचारिकता तक सीमित हुए, तब सामाजिक विघटन बढ़ा। अतः आवश्यक है कि ग्राम मंदिरों को पुनः सामाजिक पुनर्निर्माण के केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। यह कार्य केवल पुजारियों या किसी एक संगठन का नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक दायित्व है।

ग्राम मंदिर हमें यह स्मरण कराता है कि विकास केवल भौतिक सुविधाओं का विस्तार नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक संतुलन का समन्वय है। यदि ग्राम विकास की योजनाओं में मंदिर को सहभागी बनाया जाए, तो विकास अधिक स्थायी, साँस्कृतिक रूप से अनुकूल और सामाजिक रूप से समावेशी होगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि गाँव का मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि जीवन का विद्यालय, सँस्कृति का संरक्षक, समाज का संयोजक और विकास का प्रेरक है। भारतीय ग्राम्य जीवन की पुनर्स्थापना और सशक्तिकरण के लिए मंदिर की भूमिका को पुनः समझना और सुदृढ़ करना समय की आवश्यकता है। जब ग्राम मंदिर पुनः जीवंत होंगे, तब भारत की आत्मा भी पुनः प्रखर होकर विश्व को मार्गदर्शन देने में समर्थ होगी।

अशोक "प्रवृद्ध"

प्रकृति पूजा सरना व सनातन में समानताएँ

जनवरी 2026 में द्विदिवसीय राँची, झारखण्ड यात्रा के दौरान राष्ट्रीय स्वयं–सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत के द्वारा जनजाति संवाद कार्यक्रम में सरना पूजा–पद्धति की सनातन धर्म से समानता को लेकर की गई टिप्पणी के बाद यह मुद्दा बहस के केंद्र में है। कार्यक्रम के दूसरे दिन 24 जनवरी को जनजाति संवाद कार्यक्रम में मोहन भागवत ने स्पष्ट रूप से कहा कि सरना एक पूजा पद्धति है, न कि कोई अलग धर्म। हिन्दू धर्म की परिभाषा देते हुए भागवत ने तर्क दिया कि हिन्दू धर्म किसी विशेष पूजा पद्धति का नाम नहीं है बल्कि यह एक समावेशी जीवन पद्धति और साथ रहने का तरीका है। उन्होंने आदिवासियों को सनातन सँस्कृति और धर्म का मूल आधार बताया। उनके अनुसार जिस दिन जनजाति समाप्त होगी, उसी दिन सनातन भी समाप्त हो जाएगा। उन्होंने जोर दिया कि सरना को अलग धर्म के रूप में देखना समाज को तोड़ने का प्रयास है और बाहरी ताकतों को शोषण का मौका देना है। भले ही कोई पेड़ की पूजा करे या पहाड़ की, सभी का भाव एक ही है, जो सनातन मूल्यों से जुड़ा है।

उनके इन बयानों पर प्रक्रिया स्वरूप पूरे झारखण्ड में बयानों की बाढ़ आ गई, अनेक राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ भी सामने आईं, जहाँ विपक्ष ने सरना धर्म कोड की माँग को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रुख की आलोचना की, वहीं अनेक जनजातीय नेताओं ने उनके बयान का समर्थन करते हुए कहा कि कुछ वर्ष पूर्व तक हम जनजातीय बन्धु भी अपने आंगन में चीरा झंडा नहीं बल्कि महावीरी झंडा फहराया करते थे, आंगन में तुलसी चबूतरा में लगे तुलसी माता की पूजा किया करते थे, हिन्दू पर्व–त्योहारों में खुशी से भाग लेते थे और तत्संबंधी पूजा पाठ विधि–विधानपूर्वक करते था। आज भी अधिकांश सरना आदिवासी रामनवमी, नवरात्रि, महाशिवरात्रि, होली आदि पर्व त्योहारों का आयोजन करते हैं और पूजा–पाठ में भाग लेते हैं।

उल्लेखनीय है कि सरना शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अर्थात धार्मिक पहचान के रूप में उदय 1930 के दशक में हुआ था, जब सरना धर्म अर्थात सरनावाद को एक सामूहिक धार्मिक पहचान के रूप में छोटा नागपुर क्षेत्र वर्तमान झारखण्ड में प्रचारित किया गया था। सरना शब्द मूल रूप से मुंडारी भाषा के शब्द सर से निकला है, जिसका अर्थ पवित्र साल वृक्षों का झुरमुट होता है। परंपरागत रूप से यह शब्द आदिवासियों के पूजा स्थल (सरना स्थल) को संदर्भित करता है। हालांकि यह मूल रूप से मुंडारी शब्द है, लेकिन कालांतर में उरांव, हो आदि अन्य जनजातियों ने भी इसे अपनी धार्मिक पहचान के रूप में अपनाया, जो आदिवासियों में इसकी सामूहिक स्वीकार्यता का द्योतक है। सरकारी दस्तावेजों में 1970 के दशक से आदिवासियों ने जनगणना के दौरान अपनी धार्मिक पहचान सरना के रूप में दर्ज करानी शुरू की। 1971 की जनगणना में पहली बार लगभग 3,00,000 लोगों ने स्वयं को सरना धर्मावलंबी बताया था। सरना कोड की पहली औपचारिक मांग 1980 के दशक में तत्कालीन बिहार वर्तमान झारखण्ड प्रदेश के लोहरदगा संसदीय क्षेत्र के सांसद कार्तिक उरांव द्वारा की गई थी। वस्तुतः एक विशिष्ट पूजा स्थल के रूप में यह शब्द प्राचीन काल से प्रचलित है, लेकिन एक संगठित धार्मिक शब्द के रूप में इसका व्यापक प्रयोग 1930 के दशक से शुरू हुआ। 1980 के दशक से इसकी मांग शुरू है और अब यह मांग एक विकराल रूप धारण कर चुकी है।

सरना और सनातन हिन्दू धर्म के बीच संबंध को लेकर कई मत और दृष्टिकोण प्रचलित हैं। अनेक आदिवासी संगठनों और विद्वानों का तर्क है कि सरना एक पूरी तरह से स्वतंत्र प्रकृति आधारित धर्म है। इनके अनुसार सरना

धर्म में मूर्तियों की पूजा नहीं होती, बल्कि पेड़ों, पहाड़ों और नदियों (प्रकृति) की सीधे पूजा की जाती है। इसका कोई धर्मग्रंथ नहीं है। सनातन धर्म के वेद, उपनिषद आदि ग्रंथों के विपरीत सरना की परंपराएँ मौखिक हैं और इनमें कोई लिखित धर्मग्रंथ नहीं होता। सरना समाज में हिन्दू धर्म जैसी जाति अथवा वर्ण व्यवस्था नहीं होती है। सरना मान्यताओं में आमतौर पर पुनर्जन्म या कर्म के सिद्धांत की वह अवधारणा नहीं है, जो सनातन धर्म का मूल आधार है। अनेक आदिवासी लोग अंतिम संस्कार में मृतक का शव दाह करते हैं, लेकिन कई आदिवासी समुदायों में शवों को जलाने के बजाय दफनाने की परंपरा है। सरना को सनातन का हिस्सा मानने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे कई धार्मिक व साँस्कृतिक संगठनों का मानना है कि सरना वास्तव में सनातन धर्म का ही एक वनवासी रूप है। प्राचीन ऋषि–मुनियों के अरण्य सँस्कृति के अभिन्न अंग हैं। सनातन धर्म में भी तुलसी, पीपल, पर्वत, नदियाँ आदि प्रकृति की पूजा का विधान है, इसलिए यह भिन्न नहीं है। दोनों के ही साझा साँस्कृतिक मूल्य हैं। दोनों ही जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखते हैं और कई स्थानीय देवता व परंपराएँ आपस में मिलती–जुलती हैं। दोनों का ऐतिहासिक जुड़ाव भी समान है। कुछ विशेषज्ञों का तर्क है कि आदिवासी प्राचीन काल से ही हिन्दू समाज का अभिन्न अंग रहे हैं, जिसका प्रमाण रामायण–महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में भी अंकित मिलते हैं।

वर्तमान में झारखण्ड जैसे राज्यों में सरना धर्म कोड की मांग जोर पकड़ रही है, ताकि आगामी जनगणना में आदिवासियों को अपनी एक अलग धार्मिक पहचान दर्ज करने का विकल्प मिल सके। आधिकारिक तौर पर अभी इसे एक अलग धर्म की मान्यता नहीं मिली है और जनगणना के दौरान यह हिन्दू अथवा अन्य श्रेणी में दर्ज किया जाता रहा है। सरना और सनातन दोनों ही प्राचीन और साँस्कृतिक गहराई से जुड़े हुए हैं। दोनों धर्मों में एकता और समरसता का भाव है और दोनों ही धर्मों में प्रकृति और जीवन की महत्ता को माना जाता है। सरना धर्म में भी एक सर्वशक्तिमान शक्ति को माना जाता है, जिसे थान कहा जाता है जबकि सनातन धर्म में भगवान (भूमि, गगन, वायु, आकाश अर्थात अंतरिक्ष, अग्नि व नीर) को माना जाता है। महादेव, पार्वती, श्रीराम, बजरंग बली हनुमान आदि अनेक सनातन देवी–देवता पूज्य माने जाते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि इन दोनों धर्मों के बीच एकता और समानता को देखते हुए इन दोनों धर्मों को एक दूसरे के साथ जोड़कर एक नई दिशा दी जा सकती है। सनातन धर्म में प्रकृति पूजा का बहुत महत्व है। वेद, उपनिषद, पुराण आदि ग्रंथों में भी पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा, जल, वायु, अग्नि आदि प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों की महत्ता, उपयोगिता की दृष्टि से उनके प्रति पूज्य भाव दिखलाया गया है। प्राचीन ऋषि– मुनियों ने प्रकृति को देवतुल्य अर्थात भगवान का रूप माना है और उसकी पूजा करने का महत्त्व बताया है। सूर्य को भगवान सूर्य नारायण, चंद्रमा को भगवान चंद्रमा और पृथ्वी को माता कहा जाता है। सनातन धर्म में प्रकृति पूजा का बहुत महत्व है और यह सरना धर्म के साथ एक समानता है। दोनों धर्मों में प्रकृति की पूजा और आदर का महत्व है। सरना धर्म में भी महादेव शिव और देवी की पूजा का महत्व है। आदिवासी समुदाय में शिव को बड़ा देव और देवी को जगत जननी कहा जाता है। सरना धर्म में प्रकृति की पूजा के साथ–साथ शिव और देवी की पूजा भी की जाती है, जो कि सनातन धर्म के साथ एक और समानता है। दोनों धर्मों में शिव और देवी की पूजा का महत्व है और दोनों ही धर्मों में इनको शक्ति और प्राकृतिक ऊर्जा के रूप में माना जाता है। इस तरह सरना धर्म को सनातन धर्म का एक हिस्सा अथवा आदिवासी हिन्दू धर्म माना जा सकता है, क्योंकि इसमें आदिवासी सँस्कृति और हिन्दू धर्म के तत्वों का मिश्रण है। इसमें प्रकृति पूजा, शिव व देवी की पूजा और वेदों का महत्व आदि सनातन धर्म के कई तत्व शामिल हैं। कई आदिवासी समुदाय खुद को हिन्दू मानते हैं और सरना धर्म को अपना धर्म मानते हैं। विद्वानों के अनुसार वेदों पर आधारित सनातन वैदिक धर्म को सबसे प्राचीन और मूल धर्म माना जाता है, इसमें परमात्मा की एकता और सृष्टि के नियमों का महत्व है। सनातन धर्म को परमात्मा द्वारा बनाया गया माना जाता है, जबकि अन्य पंथ या मजहब मानव निर्मित हो सकते हैं।

भारत में एक नए उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक का निर्माण हुआ है

प्रहलाद सबनानी

हिंदू सनातन सँस्कृति के सँस्कारों में समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन के लिए नागरिकों को जागरूक किए जाने का प्रयास लगातार किया जाता रहा है और पश्चिमी सभ्यता के आधार पर केवल अधिकार के भाव को बढ़ावा नहीं दिया जाता है। हिंदू वेदों एवं पुराणों के अनुसार प्रत्येक राजा का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह अपने राज्य में निवास कर रहे नागरिकों की समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करे, ताकि उसके राज्य में नागरिक सुख शांति से प्रसन्नतापूर्वक निवास कर सकें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने "एकात्म मानववाद" के सिद्धांत को विकसित किया था। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो व्यक्ति एवं समाज के बीच एक संतुलित संबंध स्थापित करने पर जोर देता है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं अंत्योदय अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। विशेष रूप से भारत में आज के परिप्रेक्ष्य में इस सिद्धांत का आशय यह भी है कि सरकारी योजनाओं का लाभ समाज में अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचाने का लक्ष्य प्रत्येक राजनीतिक दल का होना चाहिए। परंतु आज की पश्चिमी सभ्यता, जो पूंजीवाद पर आधारित नीतियों पर चलती हुई दिखाई देती है, के अनुसरण में मानव केवल अपने हितों का ध्यान रखता हुआ दिखाई देता हैं एवं अपना केवल भौतिक (आर्थिक) विकास करने हेतु प्रयासरत रहता है और उसमें अपने परिवार एवं समाज के प्रति जिम्मेदारी के भाव का पूर्णतः अभाव दिखाई देता है। अतः विश्व के समस्त देशों द्वारा अपने नागरिकों एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व के निर्वहन को आंकने के उद्देश्य से भारत में उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक का निर्माण किया गया है। नई दिल्ली में दिनांक 20 जनवरी 2026 को उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक (Responsible Nations Index) का लोकार्पण किया गया। यह पहल देशों का मूल्यांकन केवल शक्ति अथवा समृद्धि से नहीं बल्कि नागरिकों, पर्यावरण एवं वैश्विक समुदाय के प्रति उनके उत्तरदायित्व के निर्वहन के आधार पर करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। 21वीं सदी के लिए यह विमर्श समयोचित और आवश्यक है।

उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक को पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने डॉक्टर अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में राष्ट्र को समर्पित किया। वैश्विक स्तर पर इस प्रकार का सूचकांक पहली बार बनाया गया है और इसे बनाने में भारत के ही विभिन्न सँस्थानों ने अपना योगदान दिया है। इस सूचकांक के माध्यम से यह आंकने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न देशों द्वारा अपने नागरिकों के हित में अपने अधिकारों का उत्तरदायित्वपूर्ण प्रयोग किस प्रकार किया जा रहा है (आंतरिक उत्तरदायित्व का निर्वहन), वैश्विक समुदाय के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किस प्रकार किया जा रहा है (बाह्य उत्तरदायित्व का निर्वहन) एवं पर्यावरण को बचाने के लिए अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किस प्रकार किया जा रहा है (पर्यावरण उत्तरदायित्व का निर्वहन)। उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक 7 आयाम, 15 दृष्टिकोण एवं 58 संकेतकों को शामिल करते हुए निर्मित किया गया है। विश्व के 154 देशों का इस सूचकांक के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। सिंगापुर को इस सूचकांक की रैंकिंग में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है, इसके बाद स्विजरलैंड द्वितीय स्थान पर, डेनमार्क तृतीय स्थान पर, साइप्रस चौथे स्थान पर रहे हैं। भारत को 16वां स्थान प्राप्त हुआ है। विश्व के शक्तिशाली देशों का स्थान उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक की सूची में बहुत निचले स्तर पर पाया गया है। अमेरिका 66वें स्थान पर रहा है, जो लीबिया से भी एक पायदान नीचे है। जापान 38वें स्थान पर रहा है। पाकिस्तान 90वें स्थान पर, चीन 68वें स्थान पर एवं अफगानिस्तान 145वें स्थान पर रहा है।

उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक का निर्माण मुख्य रूप से भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), मुंबई एवं जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली ने मिलकर किया है। इस सूचकांक के निर्माण में 3

वर्षों तक लगातार कार्य किया गया है एवं उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक के निर्माण में विश्व बुद्धिजीवी प्रतिष्ठान का भी सहयोग लिया गया है। उक्त सूचकांक के निर्माण के लिए कुल 154 देशों से विभिन्न मापदंडों पर आधारित वर्ष 2023 तक के संबंधित आँकडें इकट्ठे किये गए है एवं इन आँकड़ों एवं जानकारी का विश्लेषण करने के उपरांत इस सूचकांक का निर्माण किया गया है। यह आँकड़े एवं जानकारी विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं खाद्य एवं कृषि सँस्थान जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से लिए गए है।

आज पूरे विश्व में विभिन्न देशों की आर्थिक प्रगति को सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर से आंका जाता है, यह मॉडल पूंजीवाद पर आधारित है एवं इस मॉडल के अनुसार देश में कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्रों में हुए उत्पादन को जोड़कर सकल घरेलू उत्पाद का आकलन किया जाता है। इस मॉडल में कई प्रकार की कमियाँ पाई जा रही हैं। किसी भी देश में पनप रही आर्थिक असमानता, गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रहे नागरिकों की आर्थिक प्रगति, मुद्रा स्फीति, बेरोजगारी एवं वित्तीय समावेशन जैसे विषयों पर उक्त मॉडल के अंतर्गत विचार ही नहीं किया जाता है। अमेरिका सहित विश्व के कई देशों में अब यह माँग की जा रही है कि आर्थिक प्रगति को आँकने के लिए सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि संबंधी मॉडल के स्थान पर एक नए मॉडल का निर्माण किया जाना चाहिए।

भारतीय सनातन सँस्कृति के अनुसार, किसी भी राष्ट्र में आर्थिक प्रगति तभी सफल मानी जाएगी, जब पंक्ति में अंतिम पायदान पर खड़े नागरिक को भी समाज हित में बनाई जा रही आर्थिक नीतियों का लाभ पहुँचे। वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार आर्थिक प्रगति आँकने के मॉडल में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है इसीलिए कई देशों में गरीब और अधिक गरीब हो रहे हैं तथा अमीर और अधिक अमीर हो रहे हैं। नए विकसित किए गए उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक में यह आँकने का प्रयास किया गया है कि शासन प्रणाली किस प्रकार से नैतिक धारणाओं

भारतीय सनातन सँस्कृति के अनुसार, किसी भी राष्ट्र में आर्थिक प्रगति तभी सफल मानी जाएगी, जब पंक्ति में अंतिम पायदान पर खड़े नागरिक को भी समाज हित में बनाई जा रही आर्थिक नीतियों का लाभ पहुँचे। वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार आर्थिक प्रगति आँकने के मॉडल में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है, इसीलिए कई देशों में गरीब और अधिक गरीब हो रहे हैं तथा अमीर और अधिक अमीर हो रहे हैं।

को ध्यान में रखकर अपनी आर्थिक नीतियों का निर्माण कर रही है, राष्ट्र में समावेशी विकास हो रहा है अथवा नहीं एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने दायित्वों के निर्वहन के संदर्भ में सरकार द्वारा किस प्रकार की नीतियाँ बनाई जा रही हैं। साथ ही धर्म आधारित सदाचार संबंधी भारतीय सभ्यता एवं वैश्विक सुख शांति स्थापित करने के संबंध में किस प्रकार देश की नीतियाँ निर्धारित की जा रही हैं, इस विषय को भी उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक के निर्माण में स्थान दिया गया है।

पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्थाएँ आर्थिक प्रगति तो तेज गति से करती दिखाई देती हैं और कई पश्चिमी देश आज विकसित देशों की श्रेणी में शामिल भी हो गए हैं। परंतु इन देशों में मानवतावादी दृष्टिकोण का पूर्णतः अभाव है। पूंजीवाद पर आधारित अर्थव्यवस्थाओं में केवल "मैं" के भाव को स्थान प्राप्त है। "मैं" किस प्रकार आर्थिक प्रगति करुँ, इस "मैं" के भाव में परिवार एवं समाज कहीं पीछे छूट जाता है। इससे पश्चिमी देशों में सामाजिक तानाबाना पूर्णतः छिन्न–भिन्न हो रहा है। युवा वर्ग अपने माता–पिता की देखभाल करने के लिए तैयार ही नहीं हैं। आज अमेरिका में लगभग 6 लाख बुजुर्ग खुले आसमान के नीचे अपना जीवनयापन करने को मजबूर हैं, क्योंकि उनके बच्चे उन्हें अकेला छोड़कर केवल अपना आर्थिक विकास करने में संलग्न हैं। इसी प्रकार की कई सामाजिक कुरीतियों ने पश्चिमी देशों में अपने पैर पसार लिए हैं। पश्चिमी सभ्यता के ठीक विपरीत, भारतीय सँस्कृति में "मैं" के स्थान पर "हम" के भाव को प्रभावशाली स्थान प्राप्त है। भारतीय सनातन सँस्कृति पर आधारित सँस्कारों को ध्यान में रखकर ही विभिन्न देशों द्वारा अपने नागरिकों के प्रति उनके उत्तरदायित्व को आँकने का प्रयास उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक के माध्यम से किया गया है।

संक्षेप में एक बार पुनः यह बात दोहराई जा सकती है कि उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक विविध देशों का आकलन पारम्परिक शक्ति अथवा सकल घरेलू उत्पाद केंद्रित मानकों के बजाय उत्तरदायी शासन के आधार पर करता है। यह सूचकांक तीन मूल आयामों पर आधारित है – (1) आंतरिक उत्तरदायित्व अर्थात गरिमा, न्याय और नागरिक कल्याण का आकलन करता है। (2) पर्यावरणीय उत्तरदायित्व अर्थात प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और जलवायु कार्यवाही का मूल्यांकन करता है। (3) बाह्य उत्तरदायित्व अर्थात शांति, बहुपक्षीय सहयोग और वैश्विक स्थिरता में किसी देश के योगदान को मापता है। यह सूचकांक वैश्विक आकलन को आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के पारम्परिक मानकों से पृथक कर नैतिक शासन, सामाजिक कल्याण, पर्यावरणीय संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय उत्तरदायित्व पर केंद्रित करता है। यह सूचकांक मूल्य आधारित और मानव केंद्रित ढांचे को बढ़ावा देता है, जो नैतिक नेतृत्व, सतत विकास और वैश्विक शासन में सुधार संबंधी भारत की दृष्टि के अनुरूप है। इस प्रकार भारत ने वैश्विक स्तर पर संभवतः प्रथम सूचकांक जारी किया है। यदि वैश्विक स्तर पर कई देश इस सूचकांक के आधार पर अपने देश के नागरिकों के प्रति अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन के आकलन पर ध्यान देने का प्रयास करेंगे, तो निश्चित ही उत्तरदायी राष्ट्र सूचकांक पूरे विश्व में एक क्रांतिकारी सूचकांक के रूप में स्थापित होगा।

prahlad.sabnani@gmail.com

होली

सामाजिक समरसता का पर्व है

समाज को एकरूपता में बंधने का देता है संदेश

होली एक ऐसा पर्व है, जो सामाजिक समरसता और एकता का प्रतीक है। यह रंगों का त्योहार है, जो लोगों को एक दूसरे के साथ जोड़ता है और सामाजिक भेदभाव को दूर करता है। होली का पर्व देशभर में मनाया जाता है और यह पर्व लोगों को एक–दूसरे के साथ मिलकर रहने और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने का संदेश देता है। होली के दिन लोग अपने घरों से निकलकर एक–दूसरे के साथ रंग खेलते हैं, जो एक–दूसरे के प्रति प्रेम और स्नेह का प्रतीक है, ऐसा करने से परस्पर सामंजस्य बढ़ता है और एकरूपता आती है।

होली के पर्व के पीछे एक पौराणिक कथा हिरण्यकश्यपु नामक एक दैत्य की है, जो अपने पुत्र प्रहलाद को मारना चाहता था, क्योंकि वह भगवान विष्णु का भक्त था। हिरण्यकश्यपु ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद को मारने के लिए कहा, जिसे आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। होलिका प्रह्लाद को गोद में बिठाकर धधकती आग में बैठ गयी। भगवान विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की और होलिका आग में भस्म हो गई, तभी से लोग होलिका दहन के रूप में इस पर्व को मनाते हैं, जिसमें वे होलिका के प्रतीक को आग में जलाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कथा के अनुसार रंगों की होली खेलने का संबंध श्री कृष्ण और राधा से है।

धार्मिक मान्यता है कि श्री कृष्ण ने ग्वालों के संग मिलकर होली खेलने की प्रथा शुरू की थी। श्री कृष्ण का रंग सांवला था और राधा गोरी थीं तो कृष्ण अपनी माँ से अक्सर यही शिकायत किया करते थे, तो यशोदा जी ने कृष्ण से कहा कि जो तुम्हारा रंग है, उसी रंग को राधा के चेहरे पर भी लगा दो, इससे तुम्हारा और राधा का रंग एक जैसा हो जाएगा। कृष्ण ने अपनी माँ के कहे अनुसार ग्वालों के साथ मिलकर रंग तैयार किए और ब्रज में राधा को रंग लगाया तथा सभी ग्वालों को भी रंग लगाया, तभी से रंग वाली होली का चलन शुरू हो गया। इस होली से कृष्ण ने एकरूपता का संदेश दिया था। इसके अतिरिक्त कृष्ण ने फाल्गुन पूर्णिमा पर पूतना का वध किया था, जिसकी खुशी में ब्रजवासियों ने होली खेली थी। एक कथा के अनुसार संसार की पहली होली शिव पार्वती ने खेली थी। एक बार भगवान शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था और जब उन्हें पुनर्जीवन दान दिया था, तो उस दिन फाल्गुन पूर्णिमा थी। इस दिन कामदेव की पत्नी रति ने उन्हें तिलक लगाकर खुशी मनाई थी तथा शिव पार्वती समेत देवताओं ने भी एक–दूसरे को खुशी में अबीर, गुलाल लगाया, जिससे होली की शुरुआत हुई। इस तरह अनेक पौराणिक कथाएँ होली की प्राचीनता को दर्शाती हैं। पर जो भी हो होली का पर्व आपसी सामंजस्य और प्रेम का प्रतीक तो है ही।

'आपसी दुश्मनी को भुलाने का पर्व'

होली के पर्व का महत्व सिर्फ सामाजिक समरसता तक ही सीमित नहीं है। यह पर्व लोगों को अपने दुश्मनों को भूलने और एक–दूसरे के साथ मिलकर रहने का संदेश देता है। होली के दिन लोग आपसी दुश्मनी को भूल जाते हैं और एक–दूसरे के साथ मिलकर रंग खेलते हैं। इस दिन लोग एक–दूसरे से वर्ष भर में की गयी गलतियों की क्षमा मांगकर होली का रंग डालते हैं। इस तरह यह पर्व परस्पर प्रेम का संदेश देता है।

'शोक संतृप्त परिवारों को सांत्वना देने का अवसर'

लोकाचार की परंपरा में लोग होली के दिन अपने ऐसे सगे–संबंधियों या मित्रों के घर जाते हैं, जिनके यहाँ किसी परिजन का देवलोकगमन हुआ हो, ऐसे परिवारों में जाकर शोक संतृप्त परिवारों को रंग लगाते हैं एवं मिठाई आदि देकर उसके साथ समय बिताते हैं तथा उसे पुनः मुख्यधारा से जोड़ते हैं। इस प्रकार होली का यह पर्व जीवन में सतत चलने का संदेश देता है।

'अस्पृश्यता निर्मूलन का संदेश'

शास्त्रोक्त मान्यता है कि होलिका दहन के दूसरे दिन धुलेड़ी पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने क्षेत्र के स्वच्छताकर्मी अथवा समाज के पतित व्यक्ति को अबीर गुलाल का तिलक लगाना चाहिए, उसे गले लगाकर उसका स्वागत करना तथा यथासामर्थ्य उसे मिठाई, वस्त्राभूषण एवं द्रव्य दान आदि देकर परस्पर होली की शुभकामनाएँ प्रेषित करना, ऐसा हिन्दू पंचांग एवं लिंग पुराण आदि में विवरण मिलता है। होली का पर्व हमें अमीरी–गरीबी, ऊंच–नींच, जात–पांत के भेद से ऊपर उठकर होली के रंगों की तरह एकरस होने का संदेश देता है, जिस तरह रंगों में रंगे व्यक्ति की पहचान छुप जाती है, उसी तरह समाज में भेदभाव दूर हो यही होली का संदेश है।

जम कर होली खेलिए, बिछा रंग की सेज।
जात धरम ना रंग का, फिर किसलिए गुरेज।।

sharmabhishek.guruji99@gmail.com

हवन से मस्तिष्क (न्यूरो) की समस्याओं का समाधान

– मुरारी शरण शुक्ल

हवन से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अथर्ववेद में कांड छः सूक्त पाँच के तीन मंत्रों में यह वर्णन किया गया है कि यज्ञ में हवन करने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। मनुष्य के सारे रोग नष्ट हो जाते हैं और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

कहा गया है कि जिसके घर में हवन होता है, उसकी वृद्धि होती है और सब प्रकार की उन्नति होती है। इसके विषय में कहा गया है–

1. एनम् उत्तरं– अर्थात् जिसके घर में हवन होता है, वह (उत् + तर) अधिक उच्च बनता है, पूर्व की अपेक्षा अधिक उन्नत होता है।
2. वर्चसा सं– अर्थात् जिसके घर में हवन होता है, वह तेजस्वी होता है।
3. प्रजया बहूः– अर्थात् जिसके घर में हवन होता है, उसकी उत्तम संतान होती हैं।
4. इमं प्रत्तरं– अर्थात् जिसके घर में हवन होता है, वह अधिक ऊँचा बनता है। हर एक प्रकार से श्रेष्ठ होता है।
5. सजातानां वशी– अर्थात् स्वजातियों को अपने अधीन करने वाला होता है, जो प्रतिदिन हवन करता है।
6. राजयस्पोषेण सं– अर्थात् उसका धन बढ़ता है और पुष्टि भी बढ़ती है। वह हृष्टपुष्ट होता है।
7. जीवातवे जरसे नय– अर्थात् उसको दीर्घ आयु प्राप्त होती है। अर्थात् जिसके घर में हवन होता है, उसकी हर प्रकार से उन्नति होती है। प्रतिदिन उसको सुख और सौभाग्य प्राप्त होता है। इसीलिए प्रतिदिन हवन करना लाभकारी है। हवन से आरोग्य, बल, दीर्घ आयु प्राप्त होकर धन, यश और अन्य सब प्रकार का अभ्युदय और निःश्रेयस भी प्राप्त होता है।

इन सब बिंदुओं पर ध्यान देने से, आपको यह भी स्पष्ट होगा कि नित्य हवन करने से मनुष्य की सभी प्रकार की मानसिक बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। हवन का, उसकी समिधा से उठने वाले धूम का, सर्वाधिक लाभ मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र पर ही होता है। इसीलिए वैदिक रीति से प्रतिदिन अपने घर में हवन करना आरंभ करें और न्यूरो की सभी समस्याओं से सहज रूप में मुक्ति प्राप्त करें। भारत को सक्षम, योग्य और अत्यंत बुद्धिमानों का देश बनाएँ।

आपका क्रोध बन सकता है न्यूरो की समस्या

आप बात–बात में गुस्सा हो जाते हैं। आपके नाक पर गुस्सा है। आप तुनुक मिजाज हैं। आप शार्ट टेम्पर्ड हैं। आप फिकल माईंडेड हो गए हैं। आप किसी की एक भी बात बर्दास्त ही नहीं कर सकते। आप छोटी–छोटी बातों पर तीव्र प्रतिक्रिया करते हैं।

हर बात पर लड़ने को उतावले हो जाते हैं। लोग गर्म तवे जैसा आपका क्रोध देखकर परेशान हो जाते हैं। आप किसी के समझाने से भी कुछ नहीं सुनते। बड़ों का आदर भी भूल जाते हैं। क्रोध में, जिनका आदर करना चाहिए, उनकी भी अवमानना कर बैठते हैं। आपको लगता है कि आपका ही विउ प्वाइंट सही है, शेष सब ग़लत हैं, तो पक्का जानिए आप न्यूरो के रोगी हो जाने के लिए तैयार (रेडिमेड) मैटेरियल हैं, इस रोग की आरम्भिक अवस्था में आप पंक्तिबद्ध हो चुके हैं।

इस स्टेज पर एलोपैथिक डाक्टर आपको बिमार नहीं कह सकता, क्योंकि आपकी फिजियोलॉजी ठीक है, इंटरनल सब कुछ ठीक है। वो तो आँकड़ों के आधार पर रोग तय करते हैं।

आपकी प्रवृत्ति किस दिशा में आपको ले जाएगी, यह आयुर्वेद के उन वैद्यों को ही समझ में आ सकता है, जो आयुर्वेद के साथ ज्योतिष और योग भी जानते हों। और ऐसे लोग आज के समय में दुर्लभ हैं।

तेरापंथ महिला मंडल गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में

नई दिल्ली, 5 फरवरी 2026। विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर 4 फरवरी 2026 को अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए केवल 8 घंटे में सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग हेतु सर्वाधिक लोगों का पंजीकरण कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया। यह रिकॉर्ड देशभर में फैली महिला मंडल की लगभग 400 शाखा परिषदों द्वारा एक साथ संचालित इस महाअभियान के अंतर्गत बना, जो अपने आप में संगठित महिला शक्ति का अनुपम उदाहरण है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में अणुव्रत भवन में आयोजित समारोह में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधियों ने यह प्रमाण–पत्र आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान शिष्य मुनि उदित कुमार जी के सानिध्य में अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सुमन नाहटा को समर्पित किया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि उदित कुमार जी ने कहा–"महिला मंडल का यह उपक्रम केवल एक रिकॉर्ड नहीं बल्कि सेवा, संवेदना और संकल्प की त्रिवेणी है। महिला स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषय को लेकर इतनी व्यापक जागरूकता और सहभागिता वास्तव में अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। यह कार्य समाज को नई दिशा देने वाला है।"

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री महेंद्र नाहटा ने महिला मंडल के इस सेवा–उपक्रम की सराहना करते हुए कहा–"यह ऐतिहासिक उपलब्धि परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के पुण्य–प्रताप और प्रेरणा का सजीव प्रमाण है। महिला मंडल निरंतर समाजसेवा और विशेष रूप से महिला स्वास्थ्य के क्षेत्र में जो कार्य कर रहा है, वह वास्तव में वंदनीय है। भविष्य में भी ऐसे रचनात्मक और लोककल्याणकारी उपक्रम होते रहें, यही अपेक्षा है।"

दिल्ली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा–"महिला मंडल ने यह सिद्ध कर दिया है कि जब संकल्प सामूहिक हो, तो असंभव भी संभव बन जाता है। यह उपलब्धि न केवल तेरापंथ समाज, बल्कि संपूर्ण देश के लिए गौरव का विषय है।" इस अवसर पर तेरापंथ समाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री जोधराज बैद, महिला मंडल की प्रधान ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, न्यासी श्रीमती मंजुला भंसाली, सुनीता जैन सहित अनेक महिलाओं ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का सर्टिफिकेट स्वीकार किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती सुमन नाहटा ने कहा–"यह रिकॉर्ड किसी एक व्यक्ति या इकाई का नहीं, बल्कि देशभर के प्रत्येक महिला मंडल की निष्ठा, परिश्रम और समर्पण का परिणाम है। मैं समस्त भारत की महिला मंडल बहनों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

lalit.r.garg@gmail.com

बजरंग दल की अखिल भारतीय बैठक का आयोजन

विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल की दो दिवसीय राष्ट्रीय बैठक 7–8 फरवरी 2026 को लखनऊ (अवध प्रान्त) उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुई। इस बैठक में विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय संगठन महामंत्री माननीय मिलिंद परांडे जी का कई विषयों पर देश भर से आये बजरंग दल प्रान्त संयोजक, सह संयोजक सहित टोली के कार्यकर्ता बन्धुओं को मार्गदर्शन मिला।

इस बैठक में बजरंग दल राष्ट्रीय सह संयोजक श्री विवेक कुलकर्णी जी, लखनऊ क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेंद्र जी, अवध प्रान्त संगठन मंत्री श्री विजय प्रताप जी, एसआर ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूट कॉलेज के चैयरमैन श्री पवन सिंह जी चौहान की गरिमामय उपस्थिति रही। देश भर से आए क्षेत्र संयोजक, प्रान्त संयोजक, प्रान्त सह संयोजक और प्रान्त टोली के दायित्ववान कार्यकर्ता बंधुओं ने संगठन कार्य को और अधिक गति से करने हेतु 2 दिन तक बैठक में चिंतन–मनन किया।

इस केंद्रीय बैठक को अवध प्रान्त के अनेक कार्यकर्ता बन्धुओं ने पूर्ण समय लगाकर अपनी व्यवस्था कौशल और मेहनत से सम्पन्न करवाया।

गरबा केवल मनोरंजन का कार्यक्रम नहीं,
अपितु माता अंबा की आराधना से जुड़ी धार्मिक परंपरा है : आलोक कुमार

हरिद्वार (5 फरवरी 2026)। विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान आलोक कुमार वरिष्ठ एडवोकेट उच्चतम न्यायालय अपने उत्तराखण्ड प्रवास के दौरान हरिद्वार में प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दू समाज के धार्मिक पूजा स्थलों एवं श्रद्धा केंद्रों की अपनी प्राचीन परंपराएँ, मर्यादाएँ एवं धार्मिक व्यवस्था होती है। मंदिर पर्यटन या भ्रमण के स्थल नहीं हैं, वहाँ भगवान की प्रतिष्ठा होती है और श्रद्धालु वहाँ पूजा–अर्चना के उद्देश्य से आते हैं। जिनका धर्म मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखता और मूर्ति को तोड़ने का आदेश देता हो अथवा जो मानते हों, उन्हीं का भगवान, उन्हीं की पुस्तक से उन्हें मोक्ष मिलेगा ऐसे संदर्भों में धार्मिक संस्थाएँ अपनी परंपरागत व्यवस्था लागू कर सकती हैं।

साँस्कृतिक विषयों पर विश्व हिन्दू परिषद परिषद का दृष्टिकोण रखते हुए आलोक कुमार ने कहा कि नवरात्रि के दौरान आयोजित गरबा केवल मनोरंजन का कार्यक्रम नहीं, अपितु माता अंबा की आराधना से जुड़ी धार्मिक परंपरा है। पारंपरिक रूप से इसे नंगे पैर एवं दीप/ज्योति के साथ देवी की आराधना के रूप में किया जाता है। ऐसे आयोजनों की मूल धार्मिक भावना एवं परंपरा को सुरक्षित रखा जाना चाहिए। इस कार्यक्रम में अन्य धर्मों के लोगों को आने का आग्रह करना ठीक नहीं है।

उन्होंने कहा कि विश्व के विभिन्न धर्मों में भी उनके विशिष्ट धार्मिक स्थलों को लेकर विशेष परंपराएँ हैं। इस्लाम धर्म में मक्का–मदीना के पवित्र स्थलों पर गैर मुस्लिम प्रवेश प्रतिबंधित है तथा विभिन्न ईसाई संप्रदायों एवं अन्य धार्मिक परंपराओं में भी धार्मिक स्थलों के संबंध में विशेष व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं। हमको यह स्वीकार है क्योंकि वह उनके विशिष्ट तीर्थस्थान हैं, जहाँ वह श्रद्धा से पूजा करते हैं। विश्व हिन्दू परिषद का मानना है कि प्रत्येक धर्म अपनी आस्था और परंपरा के अनुसार व्यवस्था बनाए रखने का अधिकार रखता है।

उत्तराखण्ड की जनसँख्या संरचना के विषय पर विश्व हिन्दू परिषद की चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य के कुछ क्षेत्रों में डेमोग्राफी में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विश्व हिन्दू परिषद मांग करती है कि यह अध्ययन किया जाए कि हरिद्वार एवं आसपास के क्षेत्रों में किसी विशेष समुदाय की बसावट किसी संगठित योजना के अंतर्गत तो नहीं बढ़ रही है।

अंत में उन्होंने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद का मानना है कि धार्मिक आस्था, सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए समाज एवं शासन को मिलकर संवैधानिक ढांचे के अंतर्गत कार्य करना चाहिए।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

विहिप-धर्मप्रसार विभाग अखिल भारतीय वर्ग संपन्न

पवित्र तीर्थराज प्रयाग माघमेला क्षेत्र में विश्व हिन्दू परिषद–धर्मप्रसार विभाग का गत 8 से 11 फरवरी 2026 तदनुसार फाल्गुन कृष्ण सप्तमी से दशमी तक अखिल भारतीय प्रशासन, परियोजना एवं परावर्तन प्रमुखों का वर्ग सम्पन्न हुआ।

इस वर्ग में 22 प्रांतों से 78 कार्यकर्ता सहभागी हुये इनके साथ–साथ 8 शिक्षकों ने वर्ग एवं बैठक संचालन में सहयोग किया। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संगठन मंत्री श्री मिलिन्द जी परांडे, केन्द्रीय मंत्री श्री सुधांशु मोहन जी पटनायक एवं केन्द्रीय सहमंत्री पूज्य रामस्वरूप जी महाराज वर्ग में पूर्ण समय रहते हुये भिन्न–भिन्न सत्रों में कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किये।

केन्द्रीय सहमंत्री श्री आनंद प्रकाश जी गोयल वर्ग के वर्गाधिकारी के रूप में दायित्व निर्वहन करने के साथ–साथ काशी प्रांत के संगठन मंत्री श्री नितीन जी, धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख श्री नरसिंह जी त्रिपाठी और उनके साथियों ने वर्ग की सम्पूर्ण व्यवस्था संभाली एवं 16 सत्रों में विषय प्रतिपादन हुआ।

समुदाय को हिंदू हेरिटेज सेंटर, रोटोरुआ में सब्जियों की कटाई के लिए आमंत्रित किया गया

हिंदू हेरिटेज सेंटर रोटोरुआ ने गर्व से समुदाय को पहली बार एक साथ लाया। अपने समृद्ध समुदाय 2026 में उगाई गई सब्जी की ताजा फसल उपज का जश्न मना रही है। 8 फरवरी 2026 को आयोजित इस कार्यक्रम ने केंद्र की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। रोटोरुआ निवासियों का सामुदायिक सब्जी कटाई दिवस में भाग लेने के लिए स्वागत किया गया। हिंदू हेरिटेज सेंटर में सुबह 10.30 से दोपहर 12.00 बजे तक बगीचे में उगाई गई सभी सब्जियाँ थीं। सामुदायिक लाभ के लिए उपस्थित लोगों के बीच उदारता और सामूहिकता के मूल्यों को मजबूत किया गया। फसल ने सामुदायिक उद्यान पहल को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की सफलता को चिह्नित किया। स्वस्थ भोजन, पर्यावरणीय स्थिरता और सामुदायिक सहभागिता प्रोजेक्ट था। रोटोरुआ लेक्स काउंसिल समुदाय के उदार समर्थन से संभव हुआ।

सैंडी क्लेलैंड, पामर्स रोटोरुआ गार्डन सेंटर के मालिक और रोटरी के एक समिति सदस्य क्लब रोटोरुआ नॉर्थ ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और एक पौधा लगाया। रोटरी क्लब रोटोरुआ नॉर्थ के थॉमस ओश्लेरी के प्रोत्साहन के बाद इसकी शुरुआत की गई। बहुसांस्कृतिक परिषद और उद्यान परियोजना के एक मजबूत समर्थक ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

बैंगन, स्वीट कॉर्न, पत्तागोभी सहित विभिन्न प्रकार के जैविक उत्पादों की खेती की गई। ब्रसेल्स स्प्राउट्स, चुकंदर, सिल्वर बीट, बारहमासी पालक, मिर्च, शिमला मिर्च, सेब, कंकड़ी, लौकी, पुदीना, तुलसी, नींबू बाम, हरा प्याज, अजवाइन और पुदीना जैसी जड़ी–बूटियाँ, तुलसी और पैशन फ्रूट, तरबूज, रूबर्ब, ब्लूबेरी और स्ट्रॉबेरी सहित फल।

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष डॉ. गुना मैगेसन ने इसके महत्व पर प्रकाश डाला। फसल पर "यह आयोजन केवल भोजन इकट्ठा करने से कहीं अधिक है, यह हमारे जुड़ाव का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि बगीचे के इनाम को साँझा करके, हम आत्मनिर्भरता उदारता और स्थिरता प्रदर्शित करते हैं।

यह आयोजन सभी के लिए खुला था और फेसबुक सहित सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से प्रचारित किया गया था और व्हाट्सएप, केंद्र के समावेशी और स्वागत योग्य दृष्टिकोण को दर्शाता है। उपस्थित लोग भी जैविक बागवानी प्रथाओं और उन्हें वापस लौटाने के महत्व के बारे में सीखा। केंद्र ने प्रारंभिक बचपन केंद्रों, स्कूलों के लिए बागवानी कार्यशालाएँ शुरू करने की योजना बनाई है। परिवारों को घरेलू बागवानी और सामुदायिक स्वयंसेवा को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अलावा धन जुटाने की पहल के रूप में एक समर्पित टैरो लीव्स गार्डन की स्थापना की गई है। हिंदू हेरिटेज सेंटर कार्यक्रमों का समर्थन करें। आगंतुकों का तारों के पत्ते तोड़ने के लिए स्वागत किया जाता है और उन्हें बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। एक दान मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए हिंदू एल्डर्स के अध्यक्ष श्री विजय चंद इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

hindu.nz@gmail.com

प्राचीन काल से हिंदू मठ-मंदिर भक्ति, शक्ति, सँस्कार एवं सेवा के केंद्र रहे हैं : अरुण नेटके'

रॉंची 11 फरवरी। विश्व हिंदू परिषद रॉंची महानगर द्वारा सेवा सदन के समीप लक्ष्मी नारायण मन्दिर में अर्चक पुरोहित गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें रॉंची के विभिन्न मंदिरों के अर्चक, पुरोहित एवं पुजारियों ने भाग लिया। कई मंदिरों के ट्रस्टी भी बैठक में उपस्थित थे, इस अवसर पर अखिल भारतीय मंदिर एवं अर्चक पुरोहित संपर्क प्रमुख श्री अरुण नेटके जी ने रॉंची के विभिन्न मंदिरों से आए पुरोहितों और मंदिरों के ट्रस्टियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्राचीन काल से हिंदू मठ मंदिर भक्ति, श्रद्धा, शक्ति, सँस्कार एवं सेवा के केंद्र रहे हैं। जिसकी शक्ति को समाप्त करने के लिए मुगल काल में मंदिरों को सुनियोजित प्रयासों से तोड़ा गया, ताकि सनातन सँस्कृति को नष्ट किया जा सके। सन 1528 में श्री राम जन्मभूमि के लिए अनगिनत बलिदान हुए। 500 वर्षों के संघर्ष और 25 पीढ़ियों के बलिदान के बाद अयोध्या में श्री राम मंदिर का स्वप्न साकार हुआ है और एक वर्ष के अंदर 23 करोड़ लोगों ने प्रभु श्री राम जी के दर्शन किए।

पहले मंदिरों में जो भी पुजारी होते थे, उन्हें आयुर्वेद का पूरा ज्ञान होता था और मंदिर में आए हुए लोगों को प्रसाद के रूप में दवा देते थे। इससे मंदिर में आए हुए लोगों का इलाज भी हो जाता था। मंदिरों को पुनः आज हमें भक्ति, श्रद्धा के साथ–साथ सेवा और सँस्कार का सक्रिय केंद्र भी बनाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में आए हुए अर्चक, पुरोहित और ट्रस्टियों ने भी अपने विचार और सुझाव साँझा किए। धन्यवाद ज्ञापन महानगर अध्यक्ष श्री कैलाश केशरी ने किया। कार्यक्रम में कई मंदिरों के अर्चक पुरोहित एवं अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

chitranjan1964@gmail.com

सोए हुए लोग ही गजवा ए हिंद का सपना देख रहे हैं - मिलिंद परांडे

सँस्था विश्वम द्वारा आयोजित सनातन के समक्ष चुनौतियाँ और समाधान के संवाद में मुख्य वक्ता मिलिंद परांडे अखिल भारतीय संगठन महामंत्री विश्व हिंदू परिषद ने इंदौर प्रेस क्लब में सनातन के समक्ष चुनौतियाँ और उनके समाधान विषय के साथ कृषि में गौवंश को पुनः प्रतिष्ठित करना, विहिप प्रति वर्ष 40 हजार से अधिक किसानों को प्रशिक्षण दे रहा है, समाज में विश्व हिंदू परिषद–बजरंगदल के कार्य की भूमिका, लवजिहाद, घुसपैठ, जनसँख्या असंतुलन, हर हिंदू को अपने हृदय में अखंड भारत का संकल्प करना है, जैसे अनेक विषय पर आरजे विनी के सवालों पर समाज के साथ सवांद किया। संवाद कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्वामी अच्युतानंद जी, मुकेश जैन जी, खगेंद्र भार्गव जी, पारस जैन जी, राघवेंद्र त्रिपाठी जी, अशोक जैन जी एवम बड़ी सँख्या में समाज प्रमुख उपस्थित रहे।

हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन

गुरुग्राम, 5 फरवरी 2026। हिन्दी भाषा, लिपि एवं साँस्कृतिक चेतना के संरक्षण और संवर्धन के उद्देश्य से साँस्कृतिक गौरव संस्थान एवं रोटरी क्लब गुरुग्राम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता 2025 के विजेताओं का पुरस्कार वितरण समारोह भव्य, अनुशासित एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में विहिप इंद्रप्रस्थ प्रान्त अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना जी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में विहिप अंतरराष्ट्रीय महामंत्री श्री बजरंग लाल बांगड़ा एवं विधायक श्री मुकेश शर्मा की सहभागिता रही।

मुख्य वक्ता श्री कपिल खन्ना ने सुंदर लेखन को व्यक्तित्व निर्माण से जोड़ते हुए कहा कि स्वच्छ और स्पष्ट लेखन व्यक्ति के मन, भाव और सँस्कारों का परिचय देता है। विहिप केंद्रीय महामंत्री बजरंग लाल बांगड़ा ने कहा कि लिपि राष्ट्र की रीढ़ है, भारतीय भाषाएँ सँस्कृति का आईना हैं। साँस्कृतिक गौरव संस्थान द्वारा किया जा रहा यह कार्य समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। उन्होंने भारत की सँस्कृति और नैतिक मूल्यों पर गर्व करने को समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों और युवाओं में साँस्कृतिक चेतना जागृत कर उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ती हैं। लेखन के माध्यम से विचार और भावों का विकास होता है, जो व्यक्तित्व निर्माण की एक महत्वपूर्ण कड़ी है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

प्रस्तुति : प्रचार प्रसार आयाम

उत्तराखण्ड राज्य अल्पसँख्यक शिक्षा प्राधिकरण के गठन का स्वागत

हरिद्वार, 4 फरवरी। विश्व हिन्दू परिषद, उत्तराखण्ड के प्रांत अध्यक्ष श्री रविदेव आनंद ने उत्तराखण्ड सरकार द्वारा उत्तराखण्ड राज्य अल्पसँख्यक शिक्षा प्राधिकरण के गठन तथा राज्य में शिक्षा व्यवस्था को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने के निर्णय का स्वागत करते हुए सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है।

रविदेव आनंद ने कहा कि उत्तराखण्ड सरकार द्वारा अल्पसँख्यक विद्यार्थियों के लिए एक सुव्यवस्थित, पारदर्शी एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप प्राधिकरण का गठन एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी कदम है। यह निर्णय राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक न्याय, समान अवसर और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उत्तराखण्ड में अब शिक्षा का आधार राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और समान नागरिक अवसर होंगे। शिक्षा किसी भी समाज के भविष्य की नींव होती है। जब सभी समुदायों के बच्चे एक समान राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पढ़ेंगे, तो उन्हें आधुनिक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। इससे अल्पसँख्यक समाज के बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित होगा और वे देश के विकास में सक्रिय भागीदार बनेंगे। उन्होंने कहा कि अल्पसँख्यक शिक्षा प्राधिकरण में विभिन्न शिक्षाविदों एवं प्रशासनिक अधिकारियों को सम्मिलित किया जाना इस बात का प्रमाण है कि सरकार शिक्षा के स्तर को सुधारने हेतु गंभीर है। उत्तराखण्ड सरकार का यह कदम किसी समुदाय के विरुद्ध नहीं वरन बच्चों के उज्जवल भविष्य के पक्ष में है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परंपरागत सीमाओं में बंधना नहीं, अपितु विद्यार्थियों को राष्ट्र की प्रगति से जोड़ना है।

विहिप, उत्तराखण्ड सरकार के इस निर्णय को सामाजिक समरसता, समान शिक्षा और विकसित भारत के लक्ष्य की दिशा में एक मजबूत पहल मानती है। रविदेव आनंद ने कहा कि हम मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं उत्तराखण्ड सरकार को इस साहसिक एवं राष्ट्रहितकारी निर्णय के लिए धन्यवाद देते हैं। यह निर्णय उत्तराखण्ड को शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा देगा और समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करेगा।

अखिल भारतीय गोभक्त महिला सम्मेलन में विहिप अध्यक्ष आलोक कुमार जी एवं कार्यकर्तागण

विश्वम संवाद में विहिप संगठन महामंत्री मिलिंद पराडे जी

राँची में आयोजित मठ–मंदिर एवं अर्चक पुरोहित गोष्ठी को संबोधित करते
विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री अरुण नेटके जी तथा गोष्ठी में उपस्थित मंदिरों के पुजारी तथा न्यासी

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email : hinduvishva@vhp.org
website : www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.02.2026
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

OUR FASTENERS ARE USED IN EVERY SEGMENT

LPS BOSSARD
Proven Productivity

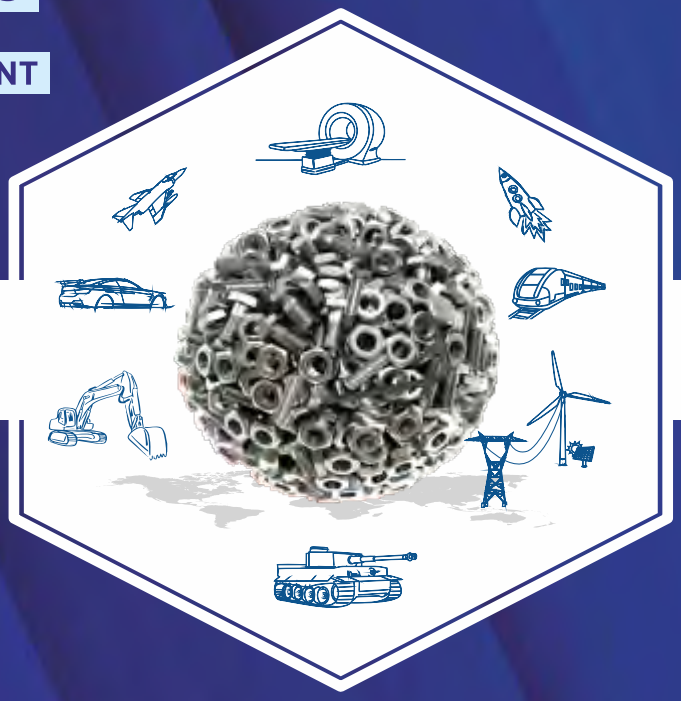

LPS Bossard Sustainable Campus

Our Social Initiatives

Mammography Bus

Tree Plantation

Bus for Eye & General Health Check-Ups

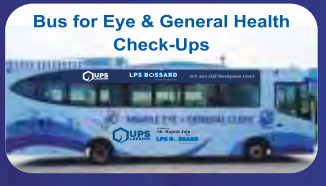

Blood Donation Bus

LPS Bossard Pvt. Ltd.

NH-10, Delhi-Rohtak Road Kharawar Bye Pass Rohtak-124001

Ph. +91-1262-205205 | india@lpsboi.com

www.bossard.com

RAJESH JAIN
MD, LPS Bossard

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी